प्राकृतिक खेती मार्गदर्शिका

प्राकृतिक खेती
मार्गदर्शिका

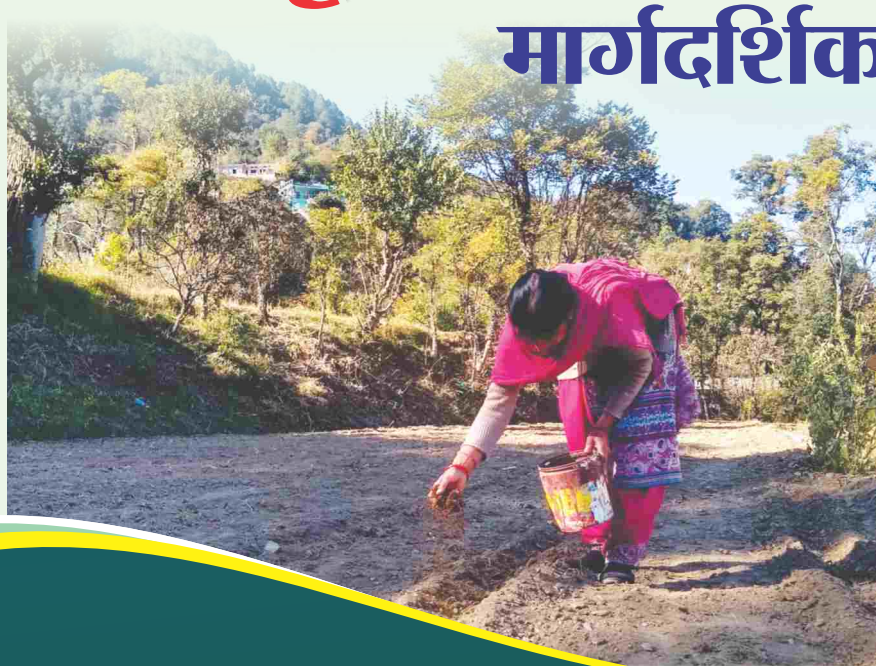

सौजन्य : कृषि प्रौद्योगिकी प्रबंधन अभिकरण (आतमा)
कृषि विभाग, जिला सोलन (हि०प्र०)

प्राकृतिक खेती

मार्गदर्शिका

सौजन्य : कृषि प्रौद्योगिकी प्रबंधन अभिकरण (आतमा)
कृषि विभाग, जिला सोलन (हि०प्र०)

2021

पौष JANUARY माघ

SUN	MON	TUE	WED	THU	FRI	SAT
11 १८ 31 तृतीया					1 द्वितीया	2 तृतीया
13 २० 3 चतुर्थी / पंचमी	14 २१ 4 षष्ठी	15 २२ 5 सप्तमी	16 २३ 6 अष्टमी	17 २४ 7 नवमी	18 २५ 8 दशमी	19 २६ 9 एकादशी
20 २७ 10 द्वादशी	21 २८ 11 त्रयोदशी	22 २९ 12 चतुर्दशी	23 ३० 13 अमावस	24 १ संक्रांति	25 २ द्वितीया	26 ३ तृतीया
27 ४ 17 चतुर्थी	28 ५ 18 पंचमी	29 ६ 19 षष्ठी	30 ७ 20 सप्तमी	1 ८ 21 अष्टमी	2 ९ 22 नवमी	3 १० 23 दशमी
4 ११ 24 एकादशी	5 १२ 25 द्वादशी	6 १३ 26 त्रयोदशी	7 १४ 27 चतुर्दशी	8 १५ 28 पूर्णिमा	9 १६ 29 प्रतिपदा	10 १७ 30 द्वितीया

माघ FEBRUARY फाल्गुन

SUN	MON	TUE	WED	THU	FRI	SAT
	1 १९ चतुर्थी	2 २० पंचमी	3 २१ षष्ठी	4 २२ सप्तमी	5 २३ अष्टमी	6 २४ नवमी / दशमी
7 २७ एकादशी	8 २८ द्वादशी	9 २९ त्रयोदशी	10 ३० चतुर्दशी	11 ३१ अमावस	12 १ प्रतिपदा	13 २ द्वितीया
14 ३ तृतीया	15 ४ चतुर्थी	16 ५ पंचमी	17 ६ षष्ठी	18 ७ सप्तमी / अष्टमी	19 ८ अष्टमी	20 ९ नवमी
21 १० नवमी	22 ११ दशमी	23 १२ एकादशी	24 १३ द्वादशी	25 १४ त्रयोदशी	26 १५ चतुर्दशी	27 १६ पूर्णिमा
28 १७ प्रतिपदा						

फाल्गुन MARCH चैत्र

SUN	MON	TUE	WED	THU	FRI	SAT
	1 १८ द्वितीया / तृतीया	2 १९ चतुर्थी	3 २० पंचमी	4 २१ षष्ठी	5 २२ सप्तमी	6 २३ अष्टमी
7 २४ नवमी	8 २५ दशमी	9 २६ एकादशी	10 २७ द्वादशी	11 २८ त्रयोदशी	12 २९ चतुर्दशी	13 ३० अमावस
14 १ संक्रांति	15 २ द्वितीया	16 ३ तृतीया	17 ४ चतुर्थी	18 ५ पंचमी	19 ६ षष्ठी	20 ७ सप्तमी
21 ८ सप्तमी	22 ९ अष्टमी	23 १० नवमी	24 ११ दशमी	25 १२ एकादशी	26 १३ द्वादशी / त्रयोदशी	27 १४ चतुर्दशी
28 १५ पूर्णिमा	29 १६ प्रतिपदा	30 १७ द्वितीया	31 १८ तृतीया			

चैत्र APRIL वैशाख

SUN	MON	TUE	WED	THU	FRI	SAT
				1 १९ चतुर्थी	2 २० पंचमी / षष्ठी	3 २१ सप्तमी
4 २२ अष्टमी	5 २३ नवमी	6 २४ दशमी	7 २५ एकादशी	8 २६ द्वादशी	9 २७ त्रयोदशी	10 २८ चतुर्दशी
11 २९ अमावस	12 ३० अमावस	13 १ संक्रांति	14 २ द्वितीया	15 ३ तृतीया	16 ४ चतुर्थी	17 ५ पंचमी
18 ६ षष्ठी	19 ७ सप्तमी	20 ८ अष्टमी	21 ९ नवमी	22 १० दशमी	23 ११ एकादशी	24 १२ द्वादशी
25 १३ त्रयोदशी	26 १४ चतुर्दशी	27 १५ पूर्णिमा	28 १६ द्वितीया	29 १७ तृतीया	30 १८ चतुर्थी	

बैशाख MAY ज्येष्ठ

SUN	MON	TUE	WED	THU	FRI	SAT
9 १९ 30 पंचमी	10 २० 31 षष्ठी					11 १ पंचमी
12 २ षष्ठी	13 ३ सप्तमी	14 ४ अष्टमी	15 ५ नवमी	16 ६ दशमी	17 ७ एकादशी	18 ८ द्वादशी
19 ९ त्रयोदशी	20 १० चतुर्दशी	21 ११ अमावस	22 १२ प्रतिपदा	23 १३ द्वितीया	24 १४ तृतीया	25 १५ तृतीया
26 १६ चतुर्थी	27 १७ पंचमी	28 १८ षष्ठी	29 १९ सप्तमी	30 २० अष्टमी	31 २१ नवमी	1 २२ दशमी
2 २३ एकादशी / द्वादशी	3 २४ त्रयोदशी	4 २५ चतुर्दशी	5 २६ पूर्णिमा	6 २७ प्रतिपदा	7 २८ द्वितीया	8 २९ तृतीया / चतुर्थी

ज्येष्ठ JUNE आषाढ़

SUN	MON	TUE	WED	THU	FRI	SAT
		1 २९ सप्तमी	2 २० अष्टमी	3 २१ नवमी	4 २२ दशमी	5 २३ एकादशी
6 २४ एकादशी	7 २५ द्वादशी	8 २६ त्रयोदशी	9 २७ चतुर्दशी	10 २८ अमावस	11 २९ प्रतिपदा	12 ३० द्वितीया
13 ३१ तृतीया	14 ३२ चतुर्थी	15 १ संक्रांति	16 २ षष्ठी	17 ३ सप्तमी	18 ४ अष्टमी	19 ५ नवमी
20 ६ दशमी	21 ७ एकादशी	22 ८ द्वादशी	23 ९ त्रयोदशी / चतुर्दशी	24 १० पूर्णिमा	25 ११ प्रतिपदा	26 १२ द्वितीया
27 १३ तृतीया	28 १४ चतुर्थी	29 १५ पंचमी	30 १६ षष्ठी			

आषाढ़ JULY श्रावण

SUN	MON	TUE	WED	THU	FRI	SAT
				1 १८ सप्तमी	2 १९ अष्टमी	3 २० नवमी
4 २० दशमी	5 २१ एकादशी	6 २२ द्वादशी	7 २३ त्रयोदशी	8 २४ चतुर्दशी	9 २५ अमावस	10 २६ प्रतिपदा
11 २७ प्रतिपदा	12 २८ द्वितीया	13 २९ तृतीया	14 ३० चतुर्थी	15 ३१ पंचमी	16 १ संक्रांति	17 २ दशमी
18 ३ नवमी	19 ४ दशमी	20 ५ एकादशी	21 ६ द्वादशी	22 ७ त्रयोदशी	23 ८ चतुर्दशी	24 ९ पूर्णिमा
25 १० द्वितीया	26 ११ तृतीया	27 १२ चतुर्थी	28 १३ पंचमी	29 १४ षष्ठी	30 १५ सप्तमी	31 १६ अष्टमी

श्रावण AUGUST भाद्रपद

SUN	MON	TUE	WED	THU	FRI	SAT
1 १७ अष्टमी	2 १८ नवमी	3 १९ दशमी	4 २० एकादशी	5 २१ द्वादशी	6 २२ त्रयोदशी	7 २३ चतुर्दशी
8 २४ अमावस	9 २५ प्रतिपदा	10 २६ द्वितीया	11 २७ तृतीया	12 २८ चतुर्थी	13 २९ पंचमी	14 ३० षष्ठी
15 ३१ सप्तमी	16 १ संक्रांति	17 २ दशमी	18 ३ एकादशी	19 ४ द्वादशी	20 ५ त्रयोदशी	21 ६ चतुर्दशी
22 ७ पूर्णिमा	23 ८ प्रतिपदा	24 ९ द्वितीया	25 १० तृतीया	26 ११ चतुर्थी	27 १२ पंचमी	28 १३ षष्ठी
29 १४ सप्तमी	30 १५ अष्टमी	31 १६ नवमी				

भाद्रपद SEPTEMBER आश्विन

SUN	MON	TUE	WED	THU	FRI	SAT
			1 १७ दशमी	2 १८ एकादशी	3 १९ द्वादशी	4 २० त्रयोदशी
5 २१ त्रयोदशी	6 २२ चतुर्दशी	7 २३ अमावस	8 २४ प्रतिपदा	9 २५ द्वितीया	10 २६ तृतीया	11 २७ चतुर्थी
12 २८ षष्ठी	13 २९ सप्तमी	14 ३० अष्टमी	15 ३१ नवमी	16 १ दशमी	17 २ एकादशी	18 ३ द्वादशी / त्रयोदशी
19 ४ चतुर्दशी	20 ५ पूर्णिमा	21 ६ प्रतिपदा	22 ७ द्वितीया	23 ८ तृतीया	24 ९ चतुर्थी	25 १० पंचमी
26 ११ पंचमी	27 १२ षष्ठी	28 १३ सप्तमी	29 १४ अष्टमी	30 १५ नवमी		

आश्विन OCTOBER कार्तिक

SUN	MON	TUE	WED	THU	FRI	SAT
9 १५ 31 दशमी					9 १६ 1 दशमी	10 १७ 2 एकादशी
11 १८ 3 द्वादशी	12 १९ 4 त्रयोदशी	13 २० 5 चतुर्दशी	14 २१ 6 अमावस	15 २२ 7 प्रतिपदा	16 २३ 8 द्वितीया	17 २४ 9 तृतीया / चतुर्थी
18 २५ 10 पंचमी	19 २६ 11 षष्ठी	20 २७ 12 सप्तमी	21 २८ 13 अष्टमी	22 २९ 14 नवमी	23 ३० 15 दशमी	24 ३१ 16 एकादशी
25 १ 17 संक्रांति	26 २ 18 त्रयोदशी	27 ३ 19 चतुर्दशी	28 ४ 20 पूर्णिमा	29 ५ 21 प्रतिपदा	30 ६ 22 द्वितीया	1 ७ 23 तृतीया
2 ८ 24 चतुर्थी	3 ९ 25 पंचमी	4 १० 26 पंचमी	5 ११ 27 षष्ठी	6 १२ 28 सप्तमी	7 १३ 29 अष्टमी	8 १४ 30 नवमी

कार्तिक NOVEMBER मार्गशीर्ष

SUN	MON	TUE	WED	THU	FRI	SAT
	1 १६ एकादशी	2 १७ द्वादशी	3 १८ त्रयोदशी / चतुर्दशी	4 १९ अमावस	5 २० प्रतिपदा	6 २१ द्वितीया
7 २२ तृतीया	8 २३ चतुर्थी	9 २४ पंचमी	10 २५ षष्ठी / सप्तमी	11 २६ अष्टमी	12 २७ नवमी	13 २८ दशमी
14 २९ एकादशी	15 ३० द्वादशी	16 १ संक्रांति	17 २ त्रयोदशी	18 ३ चतुर्दशी	19 ४ पूर्णिमा	20 ५ प्रतिपदा
21 ६ द्वितीया	22 ७ तृतीया	23 ८ चतुर्थी	24 ९ पंचमी	25 १० षष्ठी	26 ११ सप्तमी	27 १२ अष्टमी
28 १३ नवमी	29 १४ दशमी	30 १५ एकादशी				

मार्गशीर्ष DECEMBER पौष

SUN	MON	TUE	WED	THU	FRI	SAT
			1 १६ द्वादशी	2 १७ त्रयोदशी	3 १८ चतुर्दशी	4 १९ अमावस
5 २० द्वितीया	6 २१ तृतीया	7 २२ चतुर्थी	8 २३ पंचमी	9 २४ षष्ठी	10 २५ सप्तमी	11 २६ अष्टमी
12 २७ नवमी	13 २८ दशमी	14 २९ एकादशी	15 ३० द्वादशी	16 १ संक्रांति	17 २ त्रयोदशी	18 ३ चतुर्दशी
19 ४ पूर्णिमा	20 ५ प्रतिपदा	21 ६ द्वितीया	22 ७ तृतीया	23 ८ चतुर्थी	24 ९ पंचमी	25 १० षष्ठी
26 ११ सप्तमी	27 १२ अष्टमी	28 १३ नवमी	29 १४ दशमी	30 १५ एकादशी	31 १६ द्वादशी / त्रयोदशी	

मार्गदर्शन

निशा सिंह (भा०प्र०से०)
अतिरिक्त मुख्य सचिव (कृषि)

राकेश कंवर (भा०प्र०से०)
विशेष संचिव (कृषि) एवं
राज्य परियोजना निदेशक

के०सी०चमन (भा०प्र०से०)
जिलाधीश एवं अध्यक्ष
शाषी परिषद, आतमा,
जिला सोलन

प्रो० राजेश्वर सिंह चंदेल
कार्यकारी निदेशक

संकलन एवं संपादन

डॉ. रविन्द्र सिंह जसरोटिया
परियोजना निदेशक

डॉ० अजब कुमार नेगी
उप-परियोजना निदेशक-I

डॉ० धर्मपाल गौत्तम
उप-परियोजना निदेशक-II

सलाहकार मण्डल

संजय कुमार, शिवानी ठाकुर, प्रिया सोनी, अनिल भारद्वाज
शैलजा चंदेल, गौरव कुमार, रितिका शर्मा, सुशीला, निखिल कुमार, सविता नेगी
भावना, प्रियंका ठाकुर, टेक चंद , दीक्षा सैनी, सुरेश कुमार,
प्रिया कटोच, श्रुति अहिर

संपादन सहयोग

मोनिका चौहान
सपना कुमारी

सहयोग

समस्त खण्ड तकनीकी प्रबंधक, सहायक तकनीकी प्रबंधक एवं कम्प्यूटर प्रोग्रामर,
जिला सोलन

मुद्रक

दत्ता ग्राफिक्स, चम्बाघाट, सोलन

व्यक्तिगत जानकारी

नाम .....

पता.....

दूरभाष .....

निवास.....

दूरभाष .....

मोबाईल नं. .....

ई – मेल .....

मोटर कार नं. .....

इंश्योरेंस पॉलिसी न. .....

ड्राइविंग लाइसेंस नं. .....

बीमा पॉलिसी नं. .....

पासपोर्ट नं. .....

पैन नम्बर (आयकर) .....

बैंक खाता नम्बर .....

रक्त ग्रुप .....

डॉक्टर 1 .....मोबाईल नम्बर .....

2..... मोबाईल नम्बर .....

पुलिस सहायता .....

एमबुलैंस .....

अधिवक्ता..... मोबाईल नम्बर .....

टैक्सी स्टैंड.....

रेलवे बुकिंग .....

एयरपोर्ट सूचना .....

बस स्टैंड पूछताछ .....

कार मैकेनिक..... मोबाईल नम्बर .....

दूरभाष .....

बिजली शिकायत .....

पानी शिकायत .....

टी. वी. केबल ऑपरेटर..... मोबाईल नम्बर .....

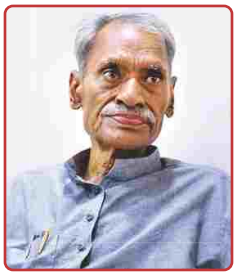

पद्म श्री सुभाष पालेकर

आहवान

हर सजीव को जहर मुक्त खाद्य, प्रदूषण मुक्त जल, भूमि पर्यावरण और सुखी आनंदी जीवन मिलना जन्मसिद्ध अधिकार है। प्राकृतिक खेती इस लक्ष्य को हासिल करने में सशक्त है।

पद्म श्री सुभाष पालेकर
(जनक, प्राकृतिक खेती)

जिलाधीश
सोलन, हिमाचल प्रदेश

संदेश

सोलन कृषि क्षेत्र में एक महत्वपर्ण जिला है। जिले के किसान मेहनतकश है तथा नई– नई कृषि तकनीकों को सफलतापर्वक अपने खेतों में अपनाकर कृषि आय में वृद्धि प्राप्त की है। जिले को टमाटर, शिमलामिर्च,फांसबीन, बेमौसमी सब्जियाँ, विदेशी सब्जियाँ एवं फूलों की खेती करने वाले जिला के रूप में भी पहचान मिली है।

कृषि रसायनों एवं खादों के असंतुलित उपयोग से कृषि उत्पादन लागत का बढना , मिटटी एवं पर्यावरण को नुकसान तथा उत्पाद का जहरीला होना जैसी कुछ समस्यायें विगत वर्षो से बढ़ रही है।

प्राकृतिक खेती अपना रहे किसानों की सफलता ने यह प्रमाणित कर दिया है कि बिना कृषि रासायनों एवं रासायनिक खादों से कृषि की जा सकती है तथा सिंचाई जल की भी कम अवश्यकता होती है।

मुझे यह जानकर हार्दिक खुशी हो रही है कि कृषि विभाग, कृषि प्रौद्योगिकी प्रबंधन अभिकरण (आतमा), जिला सोलन द्वारा प्राकृतिक खेती मार्गदर्शिका का प्रकाशन किया जा रहा है जिसमें संपूर्ण जानकारी सरल भाषा में किसानों को उपलब्ध करवाई जा रही है। मैं इस मार्गदर्शिका के प्रकाशन से जुड़े अधिकारियों एवं कर्मचारियों को बधाई देता हूँ और मुझे आशा ही नही पूर्ण विश्वास है कि प्रस्तुत मार्गदर्शिका किसानों के लिये मार्गदर्शन का काम करेगी।

(के० सी० चमन)

कार्यकारी निदेशक
प्राकृतिक खेती
खुशहाल किसान योजना (हि०प्र०)

संदेश

हिमाचल प्रदेश में किसानों की कृषि लागत को कम करने एवं आमदनी को दोगुणा करने हेतु प्रदेश सरकार द्वारा वर्ष 2018 से प्राकृतिक खेती खुशहाल किसान योजना का सफलतापूर्वक क्रियान्वयन किया जा रहा है। इस योजना के अंर्तगत कम लागत, बिना कृषि रसायन वाली तथा स्थानीय संसाधनों पर आधारित प्राकृतिक खेती को अपनाया जा रहा है। यह खेती पर्यावरण हितैषी होने के साथ–साथ किसानों को खुशहाल और आत्मनिर्भर बनाने हेतू एक सक्षम विकल्प है। इस खेती में कारखाना निर्मित किसी भी रसायनों एवं जैविक खादों का उपयोग (प्रयोग) नही किया जाता।

जिला सोलन कृषि क्षेत्र में एक महत्वपर्ण स्थान रखता है। यहां के मेहनती किसान टमाटर, शिमला मिर्च, गोभी, फ्रॉसबीन, ब्रोकली सहित अन्य विदेशी सब्जियों एवं फल उगाकर अच्छी आमदनी प्राप्त कर रहे हैं। प्राकृतिक खेती की सफलता को देखते हुये यहां के किसानों का रुझान अब प्राकृतिक खेती की तरफ हो रहा है।

प्रस्तुत प्राकृतिक खेती मार्गदर्शिका में सभी प्राकृतिक खेती आदानों को बनाने की सरल विधि तथा समयानुसार किये जाने वाले विभिन्न कृषि कार्य, क्या करें एवं क्या न करें जैसी आवश्यक जानकारी सरल भाषा में उपलब्ध करायी जा रही है। आवश्यक संपर्क सूत्र, फसलों का लेखा–जोखा रखने इत्यादि के लिए भी इस मार्गदर्शिका में जगह दी है। निश्चित ही यह प्रयास किसानों के लिए हितकर साबित होगा। मैं जिला सोलन के आतमा अधिकारियों एवं खण्ड स्तर पर इस अभियान में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे (**बी०टी०एम०/ए०टी०एम०**) कर्मचारियों को बधाई देता हूँ। जिला की यह अनुशासित एवं मेहनती टीम इसी तरह से नवोन्वेषी प्रयोग करते हुए किसानों को निरंतर प्रोत्साहित करती रहेगी। हम सभी की मेहनत एवं कार्य पद्धति से ही प्रदेश सरकार की इस महत्वपर्ण योजना की सफलता निहित है।

इस प्रयास के लिए हार्दिक अभिनन्दन।

(प्रो० राजेश्वर सिंह चंदेल)

प्रस्तावना

जिला सोलन के मेहनतकश किसानों तक ''प्राकृतिक खेती खुशहाल किसान योजना'' के तहत **सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती** को किसानों के घर द्वार पहुंचाने के लिये जिले में मौजद प्रसार अधिकारियों एवं कर्मचारियों की लगन, मेहनत एवं उनके निरन्तर प्रयासों से जिले के प्रगतिशील किसान भी इस कृषि पद्धति को अपनाने के लिये आगे आ रहे हैं। इस पद्धति में जल, जमीन, जीवन एवं पर्यावरण के संरक्षण के साथ–साथ किसान की आर्थिकी भी मजबूत हो रही है। उत्पादन लागत न के बराबर आ रही है तथा उत्पादन में कोई कमी नहीं आ रही है।

जिला के समस्त प्रसार अधिकारी, विशेषकर डा॰ अजब कुमार नेगी व डा॰ धर्मनाल गौतम, उप–परियोजना निदेशक एवं विभिन्न विकास खण्डों में तैनात खण्ड तकनीकी प्रबंधक/सहायक तकनीकी प्रबंधक सभी ने निष्ठा पूर्वक कार्य किया है। किसानों के साथ सीधा संवाद कायम करके इस पद्धति को जन आनदोलन बनाने में निरंतर प्रयासरत हैं।

प्रस्तुत **प्राकृतिक खेती मार्गदर्शिका** जिला सोलन के जुझारू एवं किसान हित में कार्य करने वाले प्रसार अधिकारियों की देन है जो भविष्य में समस्त प्राकृतिक खेती करने वाले किसानों को महीनावार विभिन्न कार्य कलापों को करने में सहायक सिद्ध होगी।

इस प्राकृतिक खेती मार्गदर्शिका के प्रकाशन से जुड़े समस्त अधिकारी एवं कर्मचारी बधाई के पात्र हैं।

(डॉ॰ रविन्द्र सिंह जसरोटिया)
परियोजना निदेशक, आतमा सोलन

जिला सोलन
एक नजर में

जिले के बारे में

सोलन, हिमाचल प्रदेश राज्य में सोलन जिले का जिला मुख्यालय है जिसका अस्तित्व 1 सितंबर 1 9 72 को हुआ। यह राज्य की राजधानी शिमला से 46 किलोमीटर दक्षिण में 1,600 मीटर (5,200 फीट) की औसत ऊंचाई पर स्थित है । इस जगह का नाम हिंदू देवी शूलिनी देवी के नाम पर है । जून के महीने में हर साल, देवी के नाम पर मेले का आयोजन किया जाता है, जिसमें शूलिनी देवी की शहर में झांकी तथा ठोडो मैदान में तीन दिन तक सांस्कृतिक कार्यक्रम मुख्य आकर्षण है। सोलन पूर्वी रियासत बघाट की राजधानी थी।

क्षेत्र में मशरूम की खेती के साथ.साथ चम्बाघाट में स्थित मशरूम रिसर्च के निदेशालय (डी.एम.आर.) की वजह से इसे **''भारत का मशरूम शहर''** भी कहा जाता है।

क्षेत्र में टमाटर के थोक उत्पादन के संदर्भ में सोलन को **''रेड गोल्ड''** का नाम दिया गया है। यह शहर चंडीगढ़ और शिमला के बीच कालका–शिमला राष्ट्रीय राजमार्ग पर स्थित है। कालका शिमला छोटी रेल लाइन सोलन से होते हुए गुजरती है तथा एक मान्यता प्राप्त विश्व धरोहर है।

क्षेत्रफल	:	1936 वर्ग कि.मी.
ग्राम पंचायतें	:	240
आबादी	:	580320
भाषा	:	हिंदी, पहाड़ी
गाँव	:	2614
पुरुष	:	308754
महिला	:	271566
विकास खण्ड	:	5 (सोलन, कण्डाघाट, धर्मपुर, कुनिहार व नालागढ)

सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती

संकल्पना

न्युनतम लागत, अधिक उपज, उच्च गुणवत्ता,स्वस्थ पर्यावरण,जहर–रोग–कीट–प्राकृतिक संकट–कृषि कर्ज एवं चिंतामुक्त के साथ–साथ किसान–बागवान को समृद्ध, खुशहाल एवं स्वावलम्बी बनाने वाली खेती ही सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती है।

प्राकृतिक खेती, किसानों की खेती के लिये आवश्यक आदानों की बाजारी खरीद को एकदम से खत्म करती है ।इस विधि की यह परिकल्पना है कि किसान सभी आवश्यक आदान घर या इसके आसपास उपलब्ध संसाधनों द्वारा ही बनायेगा। इन सभी क्रियाओं को **'शून्य लागत प्राकृतिक खेती'** नामकरण किया है जिसमें 'शून्य लागत' का अभिप्राय है कि फसल में आदान आवश्यकता हेतू बाजार से कुछ भी नहीं खरीदना ।

प्राकृतिक खेती के संचालन के 4 स्तम्भ

1. **जीवामृत** : किसी भी भारतीय नस्ल की गाय के गोबर, मूत्र तथा अन्य स्थानीय उपलब्ध सामग्रियों जैसे: गुड़, दाल का आटा तथा अदूषित या संजीव मिट्टी के मिश्रण से बनाया हुआ घोल , भूमि मे सुक्ष्म जीवाणुओं की संख्या मे बढ़ोतरी करता है। परम्परागत खेती से यह प्राकृतिक खेती अलग है क्योंकि इसमें गाय का गोबर और मूत्र, जैविक खाद के रूप में नहीं बल्कि, एक जैव–जामन के रुप मे प्रयोग किया जाता है। यह जामन,भूमि में लाभदायक सूक्ष्म जीवाणुओं एवं स्थानीय केंचुओं की संख्या एवं गतिविधियों को सर्वश्रेष्ठ स्तर तक बढ़ाकर जमीन में पहले से अनुपलब्ध आवश्यक पौष्टिक तत्वों की पौधों को उपलब्धता सरल करता है। इससे पौधों की हानिकारक जीवाणुओं से सुरक्षा तथा भूमि में जैविक कार्बन की मात्रा में बढ़ोतरी होती है।
2. **बीजामृत** : देसी गाय के गोबर, मूत्र एवं बुझा चूना आधारित घटक से बीज एवं पौध जड़ों पर सूक्ष्म जीवाणु आधारित लेप करके इनकी नई जड़ों को बीज या भूमि जनित रोगों से संरक्षित किया जाता है। बीजामृत प्रयोग से बीज की अंकुरण क्षमता में अप्रत्याशित वृद्धि देखी गई है।
3. **आच्छादन :** भूमि में उपलब्ध नमी को सुरक्षित रखने हेतू इसकी उपरी सतह को किसी अन्य फसल या फसलों के अवशेष से ढ़क दिया जाता है। इस प्रक्रिया से 'ह्यूमस ' की वृद्धि, भूमि की उपरी सतह का संरक्षण,भूमि में जल संग्रहण क्षमता, सूक्ष्म जीवाणुओं तथा पौधों के लिए आवश्यक पोषक तत्वों की मात्रा में बढ़ोतरी के साथ खरपतवार का भी नियंत्रण होता है।
4. **वापसा (भूमि में वायु प्रवाह):** यह वापसा, भूमि में जीवामृत प्रयोग तथा आच्छादन का परिणाम है। जीवामृत के प्रयोग तथा आच्छादन करने से भूमि की सरंचना में सुधार होकर त्वरित गति से 'ह्यूमस' निर्माण होता है। इस से अन्ततः भूमि में अच्छे जल प्रबंध की प्रक्रिया आरम्भ होती है। फसल न तो अधिक वर्षा–तूफान में गिरती है और न ही सूखे की स्थिति में डगमगाती है।

प्राकृतिक खेती के 4 सिद्धांत

1. **सह–फसल** : मुख्य फसल की कतारों के बीच ऐसी फसल लगाना जो भूमि में नत्रजन (नाइट्रोजन) की आपूर्ति तथा किसान को खेती लागत कीमत की प्रतिपूर्ति करें।
2. **मेढें तथा कतारें:** खेती के बीच कतारों में मेढ़ तथा नालियां बनाई जाती हैं, जिनमें वर्षा का पानी संग्रहित होकर लंबे समय तक खेत में नमी की उपलब्धता बरकरार रखता है। लम्बे वर्षा काल के समय यह नालियां तथा मेढ़ें खेतों में जमा हुए अधिक पानी की निकासी करने में मदद करती हैं।

3. **स्थानीय केंचुओं की गतिविधियां :** इस खेती विधि द्वारा जमीन में स्थानीय पारिस्थितिकी का निर्माण होताहै जिससे निद्रा में गए हुए स्थानीय केंचुओं की गतिविधियां बढ़ जाती हैं।

4. **गोबर :** भारतीय नस्ल की किसी भी गाय का गोबर एवं मूत्र, इस कृषि पद्धति में उत्तम माना गया है। क्योंकि इसमें लाभदायक सूक्ष्म जीवाणुओं की संख्या दूसरे किसी भी पशु या गाय की अन्य प्रजातियों से कई गुणा अधिक होती है।

सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती का मूल सिद्धांत है कि वायु, पानी तथा जमीन में सभी आवश्यक पोषक तत्व प्रचूर मात्रा में उपलब्ध हैं। इसलिए फसल या पेड़–पौधों के लिए किसी भी बाहरी रासायनिक खादों की आवश्यकता नहीं है। यह प्राकृतिक खेती विधि, मित्र कीट–पतंगों की संख्या में वृद्धि एवं अनुकुल वातावरण का निर्माण कर फसलों को कीट–पतंगों एवं बिमारियों से सुरक्षित करती है। इस तरह किसी भी कीटनाशक या फफूंदनाशक की आवश्यकता को भी समाप्त कर देती है।

जीवामृत और घनजीवामृत का प्रयोग भूमि में सूक्ष्म जीवाणुओं तथा केंचुओं की गतिविधियों को बढ़ाता है। जिससे भूमि में बंद अवस्था में उपस्थित विभिन्न पौष्टिक तत्वों को उपलब्ध अवस्था में बदल कर समय–समय पर आवश्यकतानुसार पौधों को उपलब्ध करवाते हैं। इस तरह सूक्ष्म जीवाणुओं तथा स्थानीय केंचुओं की गतिविधियों की सक्रियता से भूमि की उर्वरा शक्ति हमेशा–हमेशा के लिए बनी रहती है।

प्राकृतिक खेती कर रहे किसानों हेतु हिमाचल सरकार द्वारा दिए जा रहे उपदान :

1. भारतीय नस्ल की गाय	₹25,000/परिवार + ₹5,000 यातायात खर्चा + ₹ 2,000/मंडी फीस
2. गौशाला का फर्श तथा गौमूत्र एकत्र करने हेतू गड्ढा	₹ 8,000/ परिवार
3. विभिन्न आदान बनाने एवम् संग्रह हेतू ड्रम	₹ 2,250/ परिवार
4. संसाधन भंडारण खोलने हेतू	₹ 10,000–50,000 तक/समूह या परिवार/पंचायत

जिला सोलन के विभिन्न विकास खण्डों में ग्राम पंचायतों की संख्या

कृषि विभाग, हिमाचल प्रदेश

नाम एवं पद	दूरभाष		
	कार्यालय	फैक्स	पी.बी.एक्स.
श्री वीरेन्द्र कंवर, कृषि मंत्री	2620191	2880 – 605	2880 – 605
श्रीमती निशा सिंह, अतिरिक्त मुख्य सचिव कृषि विभाग	2621877	2880 – 782	2621877
श्री राकेश कंवर, (विशेष सचिव)	2620043	2620043	2880 – 658

कृषि निदेशालय

निदेशालय : 2830162, 2830174, 2830186, 2830344
ई – मेल : krishibhawan-hp@gov.in

निदेशक	2830620	2830612	501
संयुक्त निदेशक – I	2830618	2830618	104
संयुक्त निदेशक – II	2830644	2830612	504
उप निदेशक कृषि	2830345	2830612	309
सब्जी विशेषज्ञ	2830517	2830612	410

क्षेत्रीय कार्यालय

अतिरिक्त निदेशक, धर्मशाला	223642	223281	adadshala@ymail.com

विभागाध्यक्ष

निदेशक, कृषि विभाग	2830620
निदेशक, पशु पालन विभाग	2830089
निदेशक, उद्यान विभाग	2842390
निदेशक, ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज	2623820
निदेशक, नगर एवं ग्राम योजना विभाग	262249420

उपायुक्त सोलन

उपायुक्त, सोलन	श्री के. सी. चमन	220656

कृषि उपनिदेशक / जिला कृषि अधिकारी

उप निदेशक बिलासपुर	222454	223065	ddabilaspur@ymail.com
उप निदेशक चम्बा	225482	225371	ddachamba@ymail.com
उप निदेशक हमीरपुर	225482	222437	ddahamirpur@ymail.com
उप निदेशक कुल्लू	222215	222437	ddakullu@ymail.com

उप निदेशक, मण्डी	236926	236922	ddamandi@ymail.com
उप निदेशक, नाहन	222225	222277	ddasirmour@ymail.com
उप निदेशक, पालमपुर	230528	223323	ddakangra@ymail.com
उप निदेशक, शिमला	2831558	2851402	ddagri-shi-hp@gov.in
उप निदेशक, सोलन	230734	231235	ddasolan@ymail.com
उप निदेशक, ऊना	223082	226101	ddauna@ymail.com
जिला कृषि अधिकारी, किन्नौर	222364	222252	daokinnaur@ymail.com
जिला कृषि अधिकारी, केलांग	202251	–	daolspiti@ymail.com

प्रभारी, कृषि विज्ञान केन्द्र

डॉ डी. पी. शर्मा, कण्डाघाट, सोलन	01792 256232	kvkkandaghat@yspuniversity.ac.in

प्राकृतिक खेती के विभिन्न घटक

एवं

छिड़काव सारिणी

जीवामृत
बनाने की विधि
(एक बीघा भूमि के लिए)

1. एक ड्रम में 40 लीटर पानी भर कर उसमें 1.5 से 2 लीटर गौमूत्र मिलाएं
2. फिर इसमें 2 कि. ग्रा. देशी गाय का गोबर मिला दें
3. अब इसमें 250–300 ग्रा. गुड़ मिला लें
4. फिर क्रमशः 250–300 ग्रा. बेसन और एक मुठी मिट्टी मिला लें
5. अब इस घोल को घड़ी की सुई की दिशा में धीरे–धीरे घोलिए
6. इस मिश्रण से भरे ड्रम को जूट की बोरी से ढक कर 3 दिन के लिये रख दें यदि शीत लहर या सर्दी का मौसम है तो 4–5 दिन रहने दें
7. सुबह–शाम 2–2 मिनट के लिए घड़ी की सुई की दिशा में धीरे–धीरे घोलिए

भण्डारण अवधि :
इस घोल का उपयोग **14 दिन** के अंदर-अंदर करें लेकिन **7-10 दिन** के दौरान सबसे अच्छे परिणाम देखने को मिलते है

बीजामृत
बनाने की विधि
(20 कि.ग्रा. बीज के लिए)

1. 4 लीटर पानी में 1 लीटर गौ–मूत्र मिलाने के बाद इसमें 1 कि.ग्रा. ताजा गोबर मिलाएं
2. अब इसमें 50 ग्रा. चूना (बूझा हुआ) भी मिला दें
3. अब उपरोक्त घोल में एक मुठी खेत की मेढ या फसल की जड़ के पास ही मिट्टी मिला दें
4. अब इस घोल को लकड़ी के डंडे की सहायता से घड़ी की सुई की दिशा में धीरे–धीरे घोलिए
5. इसको छाँव में बोरी से ढक कर रातभर के लिए रखें
6. इस घोल को 24 घंटे रखने के बाद बीजों को उपचारित करें

भण्डारण अवधि : तैयार होने के **24 घंटे** के बाद बीजों को उपचारित करें।

बीजामृत से बीजों का उपचार

घनजीवामृत

बनाने की विधि

(एक बीघा भूमि के लिए)

1. 20 कि. ग्रा. देशी गाय का सूखा गोबर लें
2. इसमें 250. ग्रा. गुड़, 500 ग्रा. बेसन एवम् एकमुठी मिट्टी डालें
3. अब इसमें आवश्यकता अनुसार गौ–मूत्र मिलाएं
4. अब इसको फावड़े से अच्छी तरह मिलाकर छाया में रख दें
5. इसका उपयोग 48–96 घंटे में तैयार होने के तुरंत बाद किया जा सकता है, कड़ाके की ठंड में 4 दिन बाद इसका उपयोग तुरंत किया जा सकता है

घनजीवामृत तैयार करते समय यह ध्यान में रखें :-

1. यदि शीत लहर है तो इसे बोरी से ढक दें।
2. इस पर बारिश का पानी व सूर्य की रोशनी नहीं पड़नी चाहिए।

भण्डारण अवधि : इसका उपयोग एक वर्ष तक कर सकते हैं

सप्तधान्यांकुर अर्क (एक बीघा भूमि के लिए)

बनाने की विधि (1 बीघा)

1. एक कटोरी तिल (20 ग्रा.) के बीजों को थोड़े से पानी में रातभर भिगोकर रखें।
2. दूसरे दिन मूंग, उड़द, लोबिया, मोठ, गेहूं व चने (20 ग्रा. प्रत्येक) के बीजों को रातभर के लिए पानी में भिगो कर रख दें।
3. तीसरे दिन सातों प्रकार के दानों को पानी से निकालकर एक पोटली में बांध कर घर के अंदर टांग दें। बचे हुए पानी को सुरक्षित रख दें।
4. फिर बीजों के अंकुरित (एक सेंटीमीटर लम्बे) होने के उपरांत सभी बीजों को सिल्ल बट्टे से पीस कर चटनी बना लें।
5. 40 लीटर पानी, 2 लीटर गौ मूत्र, उपरोक्त बीजों का सुरक्षित रखा पानी व बीजों की चटनी मिलाकर एक मिश्रण तैयार कर लें और लकड़ी के डंडे की सहायता से मिला लें।
6. घोल तैयार होने के बाद इसको बोरी से ढक कर दो घंटे तक रख दें।
7. इसके बाद इस घोल को कपडे से छान कर बिना पानी मिलाए उपयोग कर लें।

प्रयोग : इस अर्क का उपयोग **48 घंटे** के अंदर-अंदर करें।

पौधास्त्र / नीमास्त्र/द्रेकास्त्र /कडूअस्त्र

बनाने की विधि

(एक बीघा भूमि के लिए)

1. 20 लीटर पानी में 1 लीटर गौ–मूत्र मिलाने के बाद इसमें 200 ग्रां. ताजा गोबर मिलाएं।
2. अब इसमें नीम/दरेक/कडू (1 कि.ग्रा. प्रत्येक) के पत्तों या फलों की चटनी डालें।
3. अब इस घोल को लकड़ी के डंडे की सहायता से घड़ी की सुई की दिशा में धीरे–धीरे घोलिए।
4. इस मिश्रण को 48 से 96 घंटे बोरी से ढक कर छाया में रखें।
5. इस मिश्रण को सुबह–शाम 1 मिनट के लिए घड़ी की सुई की दिशा में धीरे–धीरे घोलिए

भण्डारण अवधि : इस घोल को **3 महीने** तक भंडारित कर सकते हैं।

अग्निअस्त्र

बनाने की विधि

(एक बीघा भूमि के लिए)

1. पीसे हुए नीम/ दरेक/ कडू के 1 कि. ग्रा. पत्ते, तम्बाकू पाउडर (100 ग्रा.), तीखी मिर्च की चटनी (100 ग्रा.), देसी लहसुन की चटनी (100 ग्रा.) को गौ मूत्र (4 लीटर) में मिलाकर धीमी आंच पर ढक्कन से ढक कर उबाल लें
2. इसके बाद इस मिश्रण को 48 घंटे के लिए रख दें।
3. इस मिश्रण को सुबह–शाम 1 मिनट के लिए घड़ी की सुई की दिशा में धीरे–धीरे घोलिए।

भण्डारण अवधि : इसका उपयोग **3 महीने** के अंदर कर लेना चाहिए

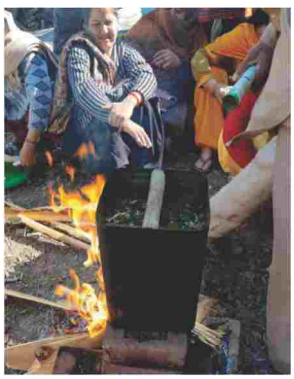

ब्रह्मास्त्र

बनाने की विधि

(एक बीघा भूमि के लिए)

1. किन्ही 5 प्रकार की वनस्पतियों (आम, अमरूद, नीम, अरंडी, दरेक इत्यादि) के पत्तों (400 ग्राम प्रत्येक) की चटनी बना लें ।
2. इस चटनी को 2 लीटर गौ–मूत्र में डालकर धीमी आंच पर एक उबाल आने तक रखें।
3. इसके बाद 48 घंटे तक ठंडा होने के लिए रख दें, दिन में दो बार 1मिनट के लिए घड़ी की सुई की दिशा में धीरे–धीरे हिलाएं।
4. इस मिश्रण को सुबह–शाम 1 मिनट के लिए घड़ी की सुई की दिशा में धीरे–धीरे घोलिए।

भण्डारण अवधि : ब्रह्मास्त्र को **6 महीने** तक भंडारित कर सकते हैं

दशपर्णी अर्क

बनाने की विधि
(1 बीघा भूमि के लिए)

1. 400 ग्राम गोबर व 4 लीटर गौ–मूत्र को 40 लीटर पानी में अच्छी प्रकार घोल कर 2 घंटे के लिए रख दें।
2. फिर इसमें हल्दी का पाउडर (100 ग्रा.), अदरक की चटनी (100 ग्रा.), हींग पाउडर (2 ग्रा.) को लकड़ी के डंडे से अच्छी तरह मिला कर 24 घंटे के लिए छाया में रखें।
3. इसके बाद एक बार फिर लकड़ी के डंडे से हिलाकर इसमें तम्बाकू पाउडर (200 ग्रा.), तीखी मिर्च की चटनी (200 ग्रा.), देसी लहसून की चटनी (200 ग्रा.) अच्छी तरह मिला कर 24 घंटे के लिए छाया में रखें।
4. इसके बाद किन्ही 10 प्रकार की वनस्पतियों के पतों जिन्हे पशु न खाते हों (400 ग्राम प्रत्येक) को इस तैयार मिश्रण में डालकर दबा दें।
5. अब इस मिश्रण को बोरी से ढक कर 30– 40 दिन के लिए रख दें। इस दौरान इस मिश्रण को सुबह– शाम घोलें।

भण्डारण अवधि : दशपर्णी अर्क को **6 महीने** तक भंडारित कर सकते हैं

पौध मलहम /पौध पेस्ट

बनाने की विधि
(1 बीघा)

1. 50 लीटर पानी में 20 लीटर गौ–मूत्र, 20 कि. ग्रा. ताजा गोबर, 2.5 कि. ग्रा. चिकनी मिटटी या 750 मि.ली. अलसी का तेल डाल कर मिला दें।
2. अब इसमें 10 कि. ग्रा. नीम/दरेक/कडू के पतों की चटनी, 200 ग्रा. हल्दी पाउडर, 10 ग्रा. हींग पाउडर डाल कर अच्छे से मिला लें।
3. इसके बाद 48 घंटे के लिए जूट की बोरी से ढक कर रख दें, 48 घंटे के बाद पौध पेस्ट प्रयोग के लिए तैयार है।

प्रयोग : इस पेस्ट को तैयार होने के बाद **48 घण्टे** तक इस्तेमाल कर सकते हैं।

सोंठास्त्र

बनाने की विधि (1 बीघा)

1. 40 ग्राम सोंठ पाउडर लें। फिर इसको 1 लीटर पानी में मिलाकर तब तक उबालें जब तक की यह घोल आधा न रह जाए। इसके बाद ठंडा कर लें।
2. एक अन्य बर्तन में देशी गाय का 1 लीटर दूध को एक बार उबाल कर ठंडा होने दें और इस दूध की मलाई को निकाल लें तत्पश्चात उतार कर ठंडा होने दें।
3. सोंठयुक्त पानी व उबाले हुए दूध को ठंडा होने के बाद छान कर 40 लीटर पानी में मिलाकर उपयोग करें।

भण्डारण अवधिकाल : सोंठास्त्र को **48 घंटे** के अंदर -अंदर उपयोग करें।

जंगल की कंडी

बनाने की विधि

1. जंगल में पड़े 5–7 दिन पुराने 3 कि.ग्रा. गोबर को इकट्ठा कर इसकी एक पोटली बनाएं।
2. पोटली को रस्सी से बांध कर 3–4 फुट लकड़ी से 100 लीटर पानी के ड्रम में लटकाएं।
3. अब इस पोटली को ड्रम के पानी में डुबो कर 48 घंटे के लिए रख दें।
4. ड्रम के पानी का रंग ताम्र जैसा हो जायेगा, तथा बाद में पोटली को पानी से निकालकर अच्छी तरह से निचोड़ कर दोबारा डुबोयें, इस प्रकार इस प्रक्रिया को 3 बार दोहराएँ।

प्रयोग : जंगल की कंडी का **48 घंटे** के अंदर -अंदर छिडकाव करें।

पौधशाला तैयार करते समय-जीवामृत छिड़काव सारणी

पहला छिड़काव : बीज अंकुरण के सात दिन बाद पौधों पर और मिट्टी पर छिड़काव 10 लीटर पानी में 200 मि. ली. जीवामृत

दूसरा छिड़काव : पहले छिड़काव के सात दिन बाद 10 लीटर पानी 500 मि . ली कपड़े से छाना हुआ जीवामृत

आखिरी छिड़काव : रोपाई के पांच दिन पहले 10 लीटर पानी 200 मि. ली. खट्टी लस्सी

प्राकृतिक खेती द्वारा तैयार टमाटर की फसल की पौधशाला

खड़ी फसल पर जीवामृत का छिड़काव (एक बीघा भूमि के लिए)

60 से 90 दिन की फसलें

पहला छिड़काव –बीज बुआई के 21 दिन बाद प्रति बीघा 40 लीटर पानी और 2 लीटर कपड़े से छाना हुआ जीवामृत

दूसरा छिड़काव –पहले छिड़काव के 21 दिन बाद प्रति बीघा 40 लीटर पानी और 4 लीटर कपड़े से छाना हुआ जीवामृत

तीसरा छिड़काव –दूसरे छिड़काव के 21 दिन बाद प्रति बीघा 40 लीटर पानी और 1 लीटर खट्टी लस्सी मिलाकर छिड़काव

90 से 120 दिन की फसलें

पहला छिड़काव –बीज बुआई के 21 दिन बाद प्रति बीघा 40 लीटर पानी और 2 लीटर कपड़े से छाना हुआ जीवामृत

दूसरा छिड़काव –पहले छिड़काव के 21 दिन बाद प्रति बीघा 40 लीटर पानी और 4 लीटर कपड़े से छाना हुआ जीवामृत

तीसरा छिड़काव –दूसरे छिड़काव के 21 दिन बाद प्रति एकड़ 40 लीटर पानी और 6 लीटर कपड़े से छाना हुआ जीवामृत

चौथा और आखिरी छिड़काव – यदि दाने दूध की अवस्था में या फलबाल्यावस्था में हों तो प्रति बीघा 40 लीटर पानी और 1 लीटर खट्टी लस्सी या 0.5 लीटर नारियल का पानी मिलाकर छिड़काव करें

120 से 135 दिन की फसलें

पहला छिड़काव –बीज बुआई के 1 माह बाद प्रति बीघा 40 लीटर पानी और 2 लीटर कपड़े से छाना हुआ जीवामृत

दूसरा छिड़काव –पहले छिड़काव के 21 दिन बाद प्रति बीघा 40 लीटर पानी और 4 लीटर छाना हुआ जीवामृत

तीसरा छिड़काव –दूसरे छिड़काव के 21 दिन बाद प्रति बीघा 40 लीटर पानी और 1 लीटर खट्टी लस्सी मिलाकर छिड़काव

चौथा छिड़काव तीसरे छिड़काव के 21 दिन बाद प्रति बीघा 40 लीटर पानी और 6 लीटर छाना हुआ जीवामृत को मिलाकर

पांचवा और आखिरी छिड़काव यदि दाने दूध की अवस्था में या फल बाल्यावस्था में हों तो प्रति बीघा 40 लीटर पानी और 1 लीटर खट्टी लस्सी या 0.5 लीटर नारियल का पानी मिलाकर छिड़काव करें

135 से 150 दिन की फसलें

पहला छिड़काव –बीज बुआई के 1 माह बाद प्रति बीघा 40 लीटर पानी और 2 लीटर कपड़े से छाना हुआ जीवामृत

दूसरा छिड़काव –पहले छिड़काव के 21 दिन बाद प्रति बीघा 40 लीटर पानी और 4 लीटर कपड़े से छाना हुआ जीवामृत

तीसरा छिड़काव –दूसरे छिड़काव के 21 दिन बाद प्रति एकड़ 40 लीटर पानी और 1 लीटर खट्टी लस्सी मिलाकर छिड़काव

चौथा और आखिरी छिड़काव – तीसरे छिड़काव के 21 दिन बाद प्रति बीघा 40 लीटर पानी और 6 लीटर कपड़े से छाना हुआ जीवामृत

पांचवा छिड़काव – चौथा छिड़काव के 21 दिन बाद प्रति बीघा 40 लीटर पानी और 8 लीटर कपड़े से छाना हुआ जीवामृत

आखिरी छिड़काव–यदि दाने दूध की अवस्था में फल बाल्यावस्था में हों तो प्रति बीघा 40 लीटर पानी और 1 लीटर खट्टी लस्सी 0.5 लीटर नारियल का पानी मिलाकर छिड़काव करें

165 से 180 दिन की फसलें

पहला छिड़काव –बीज बुआई के 1 माह बाद प्रति बीघा 40 लीटर पानी और 2 लीटर कपड़े से छाना हुआ जीवामृत

दूसरा छिड़काव –पहले छिड़काव के 21 दिन बाद प्रति बीघा 40 लीटर पानी और 4 लीटर छाना हुआ जीवामृत को मिलाकर

तीसरा छिड़काव –दूसरे छिड़काव के 21 दिन बाद प्रति बीघा 40 लीटर पानी और 1 लीटर खट्टी लस्सी मिलाकर छिड़काव

चौथा छिड़काव–तीसरे छिड़काव के 21 दिन बाद प्रति एकड़ 40 लीटर पानी और 6 लीटर कपड़े से छाना हुआ जीवामृत

पांचवा छिड़काव–चौथे छिड़काव के 21 दिन बाद प्रति बीघा 40 लीटर पानी और 8 लीटर कपड़े से छाना हुआ जीवामृत

आखिरी छिड़काव –यदि दाने दूध की अवस्था में फल बाल्यावस्था में हों तो प्रति बीघा 40 लीटर पानी और 1 लीटर खट्टी लस्सी 0.5 लीटर नारियल का पानी मिलाकर छिड़काव करें

फलदार पेड़ों पर जीवामृत का छिड़काव

फलदार पौधे (सुप्तावस्था बाद)

पहला छिड़काव–40 ली. पानी और 2 ली.जीवामृत (कपड़े से छाना हुआ)।

दूसरा छिड़काव –पहले छिड़काव के 21 दिन बाद 40 लीटर पानी और 3 लीटर कपड़े से छाना हुआ जीवामृत

तीसरा छिड़काव –दूसरे छिड़काव के 21 दिन बाद 40 लीटर पानी और 4 लीटर कपड़े से छाना हुआ जीवामृत

फल धारणा के बाद

पहला छिड़काव–40 लीटरपानी और 1 लीटर जीवामृत (कपड़े से छाना हुआ)

दूसरा छिड़काव –पहले छिड़काव के 21 दिन बाद 40 लीटर सप्तधान्यांकुर बिना पानी मिलाएं

तीसरा छिड़काव –दूसरे छिड़काव के 21 दिन बाद 40 लीटर पानी और 3 लीटर जीवामृत (कपड़े से छाना हुआ)

चौथा छिड़काव – तीसरे छिड़काव के 21 दिन बाद 40 लीटर सप्तधान्यांकुर बिना पानी मिलाएं

पांचवा छिड़काव–चौथे छिड़काव के 21 दिन बाद 40 लीटर पानी और 4 लीटर जीवामृत (कपड़े से छाना हुआ)

छठा (अंतिम) छिड़काव–पांचवे छिड़काव के 21 दिन बाद 40 लीटर सप्तधान्यांकुर बिना पानी मिलाएं

नये फलदार पौधे लगाने के बाद

नये पौधे लगाने के 1 मास बाद (पौधों एवं सह-फसलों पर छिड़काव) प्रति बीघा

पहला छिड़काव–20 लीटर पानी और 1 लीटर जीवामृत (कपड़े से छाना हुआ)

दूसरा छिड़काव –पहले छिड़काव के 21 दिन बाद 30 लीटर पानी और 2लीटर जीवामृत (कपड़े से छाना हुआ)

तीसरा छिड़काव –दूसरे छिड़काव के 21 दिन बाद 40 लीटर पानी और 4लीटर जीवामृत (कपड़े से छाना हुआ)

चौथा छिड़काव – तीसरे छिड़काव के 21 दिन बाद 40 लीटर पानी और 1लीटर खट्टी लस्सी

पांचवा छिड़काव–चौथे छिड़काव के 21 दिन बाद 40 लीटर पानी और 4 लीटर जीवामृत (कपड़े से छाना हुआ)

इसके बाद महीने में एक बार 40 लीटर पानी और 4 लीटर जीवामृत छिड़कते रहें

फलधारणा होने के बाद पहले दी हुई 6 छिड़काव की सारणी को अमल करें

क्या करें

गोबर एवं मूत्र के बारे में

- केवल गाय (देसी / पहाड़ी) का गोबर उपयोग करें।
- गोबर जितना ताजा होगा उतना ही अच्छा होगा।
- गोबर 7 दिन तक प्रभावशाली होता है।
- जो गाय दूध नहीं देती है उसका गोबर व मूत्र उतना ही अधिक प्रभावशाली होता है ।
- गौमूत्र जितना पुराना होगा उतना ही लाभकारी होगा।
- यदि आपके पास देसी बैल है तो आधा गोबर बैल का मिला सकते हैं लेकिन अकेले बैल का गोबर नहीं होना चाहिये। भैंस का गोबर भी नही चलेगा।
- बूढी या ऐसी देसी गाय जो दुग्ध उत्पादन नहीं करती हो , उसका गोबर एवं मूत्र अति उत्तम होता है।

खेत या मेढ़ की मिट्टी के बारे में

- बीजामृत बनाने के लिये खेत की मेढ की मिट्टी या फसल की जडों के पास की मिट्टी ही लें।
- खेत के चारों ओर मेढ़ की मिट्टी ,जहां किसी भी प्रकार के रासायनिक कीटनाशक अथवा खरपतवारनाशक का उपयोग नहीं किया गया हो, उस मिट्टी को सजीव मिट्टी कहा जाता है। उसमें विभिन्न प्रकार के उपयोगी जीवाणु मौजूद होते हैं।

क्या करें

- फसल सुरक्षा के अंतर्गत रामबाण का उपयोग किया जा सकता है (**40 लीटर पानी में 1 लीटर खट्टी लस्सी व 2 लीटर जीवामृत**)।
- खट्टी लस्सी को पानी मे मिला कर ही इस्तेमाल करें। गर्मियों मे 8–10 दिन पुरानी खट्टी लस्सी और सर्दियों मे 15 दिन तक पुरानी खट्टी लस्सी ही इस्तेमाल करें।
- प्राकृतिक खेती के सभी घटकों को बनाते समय इनमें इस्तेमाल होने वाले सभी पदार्थों की सही मात्रा का ध्यान रखें।
- प्राकृतिक खेती के सभी घट्कों को छाया में ही संग्रहित करें, तेज धूप में जीवाणु खत्म हो जाते हैं।
- सब्जियों के बीज को ठण्डे पानी से धोकर बीजामृत से संस्कार कर छाया में सुखा कर बिजाई करें।
- प्राकृतिक खेती के सभी घट्कों को बारिश के पानी से बचायें।
- प्राकृतिक खेती के सभी घट्कों को इस्तेमाल करने के लिये बिमारी या कीट के आक्रमण का इंतजार ना करें, समय समय पे शुरु से ही इनका छिड़काव करते रहें।
- फसल चक्र में दलहनी फसलों में एक टिकाऊ फसल उत्पादन प्रक्रिया विकसित होती है। अधिक खाद चाहने वाली फसलों के बाद कम खाद चाहने वाली फसलों का उत्पादन करें। अधिक पानी चाहने वाली फसल के बाद कम पानी चाहने वाली फसलों का उत्पादन करें।
- अधिक निराई–गुड़ाई वाली फसल के बाद कम निराई–गुड़ाई वाली फसल, उथली जड़ वाली फसल के बाद गहरी जड़ वाली फसलों को उगाना चाहिए।
- दलहन फसलों के बाद अदलहनी फसलों का उत्पादन, अधिक मात्रा में पोषक तत्व शोषण करने वाली फसल के बाद खेत को खाली रखना, एक ही नाशी जीवों से प्रभावित होने वाली फसलों को लगातार नहीं उगाना चाहिए।

क्या न करें

- जीवामृत के साथ किसी भी कीटनाशी अस्त्र का इस्तेमाल ना करें।
- प्राकृतिक खेती के सभी घट्कों को इस्तेमाल करने के लिये बिमारी या कीट के आक्रमण का इंतजार ना करें, समय समय पर शुरु से ही इनका छिड़काव करते रहें।
- खट्टी लस्सी को बिना पानी मिलाये इस्तेमाल ना करें।
- प्राकृतिक खेती के घट्कों को मिश्रित ना करें (जीवामृत और खट्टी लस्सी के अलावा)।
- सप्तधान्याकुर अर्क बनाते समय तेल बीज (सोयाबीन) का इस्तेमाल ना करें।
- जर्सी और होल्सटीन फ़्रिसियन (विदेशी नस्ल) गाय का गोबर और मूत्र इस्तेमाल ना करें।
- तेज धूप और दोपहर के समय पौधों को पानी ना दें। क्योंकि इस समय वाष्पिकरण से पानी वाष्प बन कर उड़ जाता है।
- प्राकृतिक खेती के घटकों का छिड़काव दोपहर के समय ना करें।
- देसी या पहाड़ी गाय के ताजे गोमूत्र का इस्तेमाल ना करें।
- प्राकृतिक खेती के विभिन्न घटक बनाते समय ताजे गोबर का ही इस्तेमाल करें।

प्राकृतिक विधि

द्वारा

सब्जियों व फलों

की वार्षिक कार्य रुपरेखा

प्राकृतिक खेती के विभिन्न मॉडल

फसल के अंतर्गत, क्षेत्रफल का चुनाव

कुल भूमि में से मुख्य फसल के लिए आबंटित क्षेत्र = 70 प्रतिशत

कुल भूमि में से सह– फसल के लिए आबंटित क्षेत्र = 30 प्रतिशत

खरीफ मौसम की मुख्य फसलों के मॉडल

क्र. संख्या	मुख्य फसल (70% क्षेत्र)	सह फसल (30 % क्षेत्र)
1.	टमाटर	बूटा बीन्स, माश
2.	शिमला मिर्च	बूटा बीन्स, माश
3.	मक्की	लोबिया, राजमाश
4.	बेल वर्गीय बीन्स	मूली, धनिया
5.	अदरक	मक्की, दाल वाली फसल
6.	कद्दुवर्गीय फसल	लोबिया

रबी मौसम की मुख्य फसलों के मॉडल

क्र. संख्या	मुख्य फसल (70 % क्षेत्र)	सह फसल (30 % क्षेत्र)
1.	गेहूँ	चना, मटर, सरसों, मेथी
2.	लहसुन	मेथी, धनिया, सरसों,
3.	आलू	मटर, धनिया
4.	मटर	धनिया, मेथी, सरसों , मूली
5.	प्याज	धनिया, मेथी, सरसों , मूली

रबी मौसम की फसल का मॉडल

मुख्य फसल–गेहूँ ; सह फसल – मटर, मेथी, धनियॉ, मूली व सरसों

जब जुताई शुरू होती है तब अन्य कलाएं प्रारंभ होती हैं
अत: किसान मानव संस्कृति के प्रवर्तक हैं |

- डेनियल वेबस्टर

जनवरी

- प्याज की तैयार पनीरी को बीजामृत से उपचार करने के बाद 15x10 सै.मी. की दूरी पर खेतों में लगायें और जीवामृत (**20 लीटर पानी में 1 लीटर जीवामृत कपडे से छाना हुआ**) से सिंचाई करें। प्याज की मुख्य फसल के साथ सह फसल के रूप में धनियाँ और मूली को लगाया जा सकता है।
- फूल गोभी में तना सडन रोग (यह रोग प्राय दिसम्बर मास में पौधों पर मिट्टी चढाने के साथ ही शुरू हो जाता है। प्रभावित पौधों के पत्तों की चमक खतम हो जाती है, पत्ते पीले पड़ के गिर जाते हैं और तने पर भूरे रंग की सडन के साथ तने अंदर से खोखले हो जाते हैं। इसकी रोकथाम के लिए मिट्टी चढाने के साथ ही सूखी घास या पतों से आच्छादन करें और खट्टी लस्सी (**40 ली. पानी के में 1 ली. खट्टी लस्सी 8–10 दिन पुरानी**) जो की एक बहुत अच्छे फफून्दनाशक के तौर पर काम करती है, जंगल की कंडी (**बिना पानी मिलाए**), सोंठास्त्र (**बिना पानी मिलाए**) आदि का इस्तेमाल 3 दिन के अन्तराल पर एक के बाद एक करें।
- गेहूँ में खट्टी लस्सी का 10 दिन के अंतराल में छिडकाव करें जिससे गेहूँ में पीलेपन और पाले से होने वाले नुकसान कम होंगे। गेहूँ की फसल में आच्छादन जरुर करें इससे खरपतवार नहीं उगेंगे और पाले से होने वाला नुकसान भी कम होगा।
- गेहूँ में आने वाली प्रमुख बीमारियों जैसे की पीला रतुआ (पत्तों और उनके आवरणों पर छोटे– छोटे पीले फफोले कतारों में शिराओं के मध्य प्रकट होते हैं), भूरा रतुआ (गोल व भूरे रंग के बिखरे हुए कील पतों पर प्रकट होते हैं), काला रतुआ (गहरे भूरे रंग की कीलें, तनें, पतों और पतों के आवरणों पर दिखाई देती है जो बाद में फट जाती है), चूर्णलासिता रोग (रोग से प्रभावित पौधों पर फफूंद की सफेद से मटमैली रूई की हलकी तह नजर आती है) इनके रोकथाम के लिए समय– समय पर खट्टी लस्सी (**40 ली. पानी में 1 ली. खट्टी लस्सी 8–10 दिन पुरानी**) व जीवामृत (**40 लीटर पानी में 2 ली. कपड़े से छाना हुआ**) जो की एक बहुत अच्छे फफून्दनाशक के तौर पर काम करता है, जंगल की कंडी, सोंठास्त्र (बिना पानी मिलाए) आदि का इस्तेमाल 3 दिन के अन्तराल पर एक के बाद करें।

मटर की फसल में अच्छादन

- गेहूँ की फसल में निचले पर्वतीय क्षेत्रों में दीमक (असिंचित इलाकों में अंकुरित पौधों को क्षति), टिड्डे (अंकुरित फसल के पौधों को नष्ट कर हानि) और तेला (यह कीट पौधों के पतों से रस चूस कर हानि पहुंचाता है)। इन प्रमुख कीटों की रोकथाम के लिए दीमक और टिड्डों के लिए दशपर्णी अर्क (**40 लीटर पानी में 1 लीटर**) 1 बीघा खेत या फसल में दोपहर बाद छिड़काव करें और गेहूं के तेले (रस चुसक कीट) के लिए पौधअस्त्र/ दरेकास्त्र/ कडूअस्त्र (**बिना पानी मिलाए**) ब्रह्मास्त्र, अग्निअस्त्र (**40 लीटर पानी में 1 लीटर**) में मिलाते हुए 1 बीघा खेत या फसल में दोपहर बाद छिड़काव करने से लाभ होता है।

गेहूं की फसल में अच्छादन

- मटर में जीवामृत का तीसरा छिडकाव (40 **लीटर पानी में 4 लीटर जीवामृत**) तथा जीवाणु रोग (PSEDOMONAS SYRINGAE) की रोकथाम के लिए सोंठास्त्र का इस्तेमाल करें।
- लहसून में जीवामृत की तीसरी मात्रा डालें (40 **लीटर पानी में 4 लीटर जीवामृत**) और खट्टी लस्सी का छिडकाव करें और सह फसल के रूप में मेथी, धनियॉ और पालक का कटान का कार्य करें।
- प्याज की फसल में पीला रतुआ रोग की रोकथाम के लिए रामबाण **[(40 लीटर पानी में 2 लीटर कपड़े से छन्ना हुआ जीवामृत और 1 लीटर खट्टी लस्सी (8–10 दिन पुरानी)]**, की स्प्रे करें।
- आलू के बीज को 24 घंटे पूर्व बीजामृत से उपचार के बाद तैयार खेत में लगायें खेत तैयार करते समय अंतिम बुआई के दौरान 80 कि. ग्रा. घनजीवामृत प्रति बीघा डालें और बीज लगाने के बाद सूखी घास/सूखी पत्तियों से आच्छादन करें।

मटर की फसल में जंगल के सूखे पतों से आच्छादन

आलू के बीज का बीजामृत से उपचार

प्याज की मुख्य फसल के साथ मूली और धनियॉ को सह फसल के रूप में प्राकृतिक रूप से लगाने का तरीका

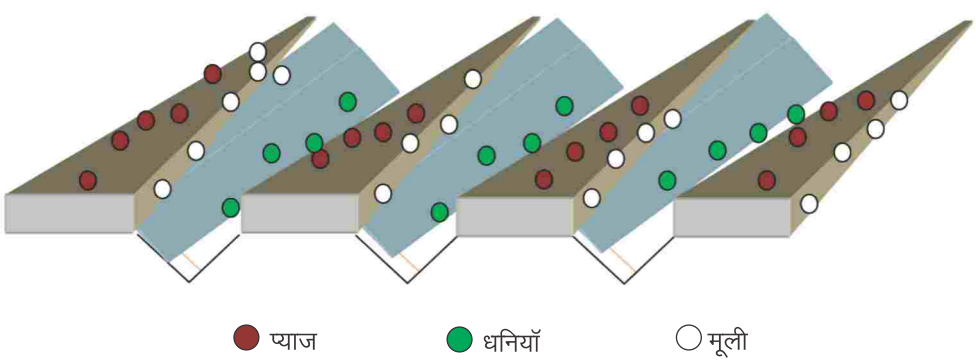

बिजाई के बाद और
जमाई से पहले

वापसा बनाने के लिए गेहूं की फसल में जीवामृत की नालियों में सिंचाई

फल

- सेब की मुख्य किस्म के साथ 33 प्रतिशत परागण किस्मों को लगायें।
- कैंकर रोग एवम् काँट–छाँट के घावों पर पौध पेस्ट का कार्य पूर्ण करें। घावों को हरे और स्वस्थ छाल तक साफ कर पौध पेस्ट लगायें। संकीर्ण कोण, रोगग्रस्त, उलझी हुई एवम् बरसाती शाखायों को हट्टा दें ताकी प्रकाश अवरोधन में सुधार हो सके तथा उसके पश्चात् कटी हुई शाखायों में पौध पेस्ट का उपयोग करें।
- पौधों के फैलाव के अनुसार तौलिये बनायें, खरपतवार हटाकर, मिट्टी भुरभुरी बनाकर घनजीवामृत (10 **कि.ग्रा. प्रति पौधा**) डालने हेतू उपयुक्त बनाएं और तैयार तौलिये में अच्छादन करें।
- बिमारी युक्त छंटाई की गयी लकड़ियों को इक्कठा करके बगीचे से दूर जलाएं/दफनायें।
- विभिन्न फलों का पौधा लगाने के लिए **80 कि. ग्रा.** घनजीवामृत सम मात्रा में प्रति बीघा के हिसाब से फैलाकर अंतिम जोताई से मिट्टी में मिला दें। अलग–अलग फलों में पौधे लगाने के अंतराल पर चौराहें तैयार करें तथा हर चौराहें पर 1.5 से 2 फुट लम्बा, 1.5 से 2 फुट चौड़ा और 1.5 से 2 फुट गहरा खड्डा खोद लें मिट्टी को खड्डे से निकलकर खड्डे के पास ही रखें। इन्हें कड़ी धूप में सूखने दें तथा बाद में उस निकाली मिट्टी को खड्डे के पास ही थोडा फैलाएं। उसके ऊपर जितनी मिट्टी है उसका 10 फीसदी हिस्सा घनजीवामृत दाल दें। इसके बाद **500 मि. ली.** जीवामृत और लगभग **500 ग्रा.** सूखे पतों का चुरा दाल दें। सबको फावड़े से मिलाएं और वहीं ढेर लगा लें। 48 घंटे में सजीव मिट्टी तैयार हो जाएगी। जहाँ तापमान 10 डिग्री सेंटीग्रेड से कम जाता है वहां इसे तैयार होने में 8–10 दिन लग सकते हैं।
- नर्सरी से लाये हुए किसी भी कलमी पौधे से प्लास्टिक का कवर निकाल कर कलम से पौधे को बाएं हाथ में पकड़ें। फिर कलम को खड्डे में इस तरह रखें ताकी जड़ें बीचों– बीच लटकती रहें। दाहिने हाथ से मग्गे में जीवामृत लेकर कलम की जड़ों में डालकर फिर सजीव मिट्टी से खड्डा भर दें और आच्छादन करें।
- आम, लीची, निम्बू प्रजातीय फलों के पौधों में तोलिया बना कर घनजीवामृत डालने का कार्य करें। छोटे पौधों को शीत पक्षपात व पाले से बचाने के लिए घास से ढकें। बड़े पौधों को पाले से बचाने के लिए सिंचाई तथा धुआं करें।
- फसलों की अच्छी पैदावार के लिए मिट्टी में सदैव सामान्य नमी का होना बहुत ही आवश्यक है अतः वर्षा के अभाव में आच्छादन जरुर करें इससे आवश्यक नमी बनी रहेगी, पाले से फसलों को नुकसान कम होगा, खरपतवारों की संख्या नियंत्रित रहेगी और तापमान भी उत्तम रहेगा।

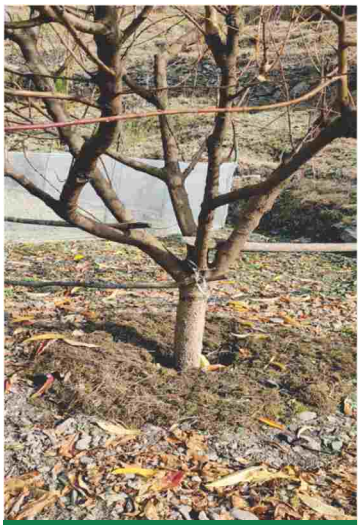

गुठलीदार पौधों में पौधपेस्ट

फलों के प्राकृतिक बगीचे में कंटाई-छंटाई और तोलिये बनाने का कार्य

आच्छादन

सेब के पौधे में घनजीवामृत डालने के बाद आच्छादन

सेब के पौधे में लड्डू विधि द्वारा तैयार घनजीवामृत का उपयोग

किसान की आय-व्यय का लेखा जोखा

कुल क्षेत्र	फसलें	रासायनिक खेती		प्राकृतिक खेती	
		कुल व्यय	कुल आय	कुल व्यय	कुल आय

ईमानदारी मेहनत जिसकी शान है, वह मेरे देश का किसान है

फरवरी

- मटर में स्टेकिंग करें और चूर्ण फफूंदी रोग (POWDERY MILDEW), डाउनी मिल्डयू की रोकथाम के लिए सूखी घास या पत्तों से आच्छादन करें और खट्टी लस्सी (**40 ली. पानी में 1 ली. खट्टी लस्सी 8–10 दिन पुरानी**), जीवामृत (जो की एक बहुत अच्छे फफून्दनाशक के तौर पर काम करता है), जंगल की कंडी, सोंठास्त्र (बिना पानी मिलाए) आदि का इस्तेमाल 3 दिन के अन्तराल पर एक के बाद एक करें।
- मटर में लीफ माइनर (पर्णखनिक) और थ्रिप्स की रोकथाम के लिए पौधअस्त्र/ दरेकास्त्र/ कडूअस्त्र (बिना पानी मिलाए), ब्रह्मास्त्र, अग्निअस्त्र (**40 लीटर पानी में 1 लीटर मिलाते हुए**) 1 बीघा खेत या फसल में (दोपहर बाद) का इस्तेमाल करना लाभदायक होता है।
- टमाटर और शिमला मिर्च की अगेती फसल की पौध के लिए बिजाई करें, बिजाई से पहले बीज को बीजामृत से 24 घंटे पूर्व उपचार करें और 3 मीटर लम्बी, 1 मीटर चौड़ी और 15 से. मी. ऊँची क्यारी में घनजीवामृत डालें और बिजाई के बाद बीजों को घनजीवामृत से ढक दें, जीवामृत से सिंचाई करें और तुरंत बाद आच्छादन करें।
- प्याज की फसल में जीवामृत की दूसरी मात्रा डालें तथा गुडाई करें और थ्रिप्स (रस चुसक कीट) की रोकथाम के लिए के लिए पौधअस्त्र/ दरेकास्त्र/ कडूअस्त्र (बिना पानी मिलाए), ब्रह्मास्त्र, अग्निअस्त्र (**40 लीटर पानी में 1 लीटर मिलाते हुए**) 1 बीघा खेत या फसल में (दोपहर बाद) छिड़काव करने से लाभ होगा।
- फूल गोभी व बंदगोभी में कर्ड रोट और पाले से फसल के बचाव के लिए रामबाण (**40 लीटर पाने में 2 ली. जीवामृत और 1 ली. खट्टी लस्सी**) का छिडकाव करें।
- गेहूँ में जीवामृत का तीसरा छिड़काव करें (**40 लीटर पानी में 2 लीटर जीवामृत**) तथा खट्टी लस्सी (**40 ली. पानी में 1 ली. खट्टी लस्सी 8 –10 दिन पुरानी**) का 10 दिन के अंतराल में छिडकाव करें जिससे गेहूँ में पीलेपन और पीले रतुये का प्रकोप नहीं होगा।
- सेब के पौधों के लिए 200 **लीटर पानी में 20 लीटर जीवामृत** डाल कर छिड़काव करने से स्केल, माइट और थ्रिप्स का नियंत्रण होता है। 100 **लीटर पानी में 3 लीटर खट्टी लस्सी** घोल कर छिडकाव करें इससे स्कैब रोग का नियंत्रण होता है।
- फलदार पौधों के तोलिये में घनजीवामृत डालने का कार्य करें।
- गुटलीदार फलों की पौधशाला में कलम करने का कार्य करें तथा ओलों से बचाने के लिए पौधों को जाली से ढकें।
- किवी फल में जीवामृत डालने का कार्य करें शीतकालीन कांट–छांट का कार्य पूरा करें। एक वर्षीय बीज शाखा का जीभ ग्राफ्टिंग विधि से प्रवर्धन करें और तुरंत पश्चात् कटी हुई शाखायों में पौध पेस्ट लगायें।
- आम, लीची, निम्बू प्रजातीय फल व अमरुद में घनजीवामृत 10 **कि. ग्रा. प्रति पौधा** के हिसाब से डालें।
- सेनजोस स्केल और रेड माइट के सर्दियों के अण्डों को नष्ट करने के लिए जीवामृत का छिडकाव करें और पौधअस्त्र/ दरेकास्त्र/ कडूअस्त्र (**बिना पानी मिलाए**), ब्रह्मास्त्र, अग्निअस्त्र (**40 लीटर पानी में 1 लीटर मिलाते हुए**) 1 बीघा खेत या फसल में (दोपहर बाद) लाभदायक होता है।
- लहसुन की फसल में खट्टी लस्सी और जीवामृत का छिडकाव करें, जिससे उसके बल्ब का अच्छा आकार बनेगा।

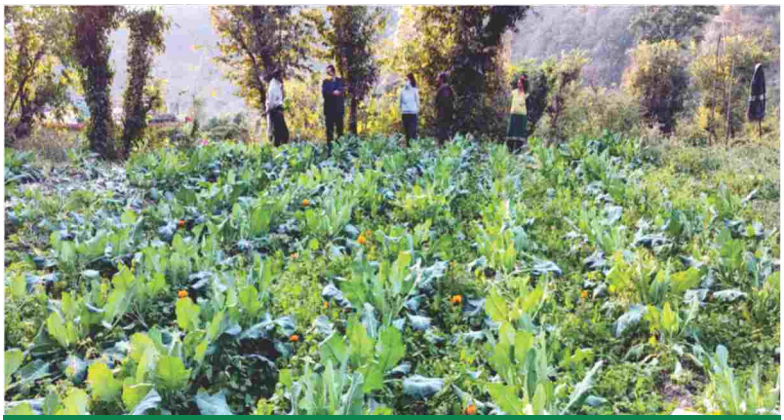

फूलगोभी और गेंदे की मिश्रित खेती (सूत्रकृमि की रोकथाम के लिए)

बंदगोभी की प्राकृतिक फसल

टमाटर की प्राकृतिक विधि द्वारा तैयार पौधशाला

किसान की आय-व्यय का लेखा जोखा

कुल क्षेत्र	फसलें	रासायनिक खेती		प्राकृतिक खेती	
		कुल व्यय	कुल आय	कुल व्यय	कुल आय

मार्च / MARCH

देश की प्रगति है तब तक अधूरी,
किसान के विकास के बिना न होगी पूरी

मार्च

- फूलगोभी में तेले और लाल चींटी (Red Mite) के नियंत्रण के लिए पौधअस्त्र/ दरेकास्त्र/ कडूअस्त्र (बिना पानी मिलाए), ब्रह्मास्त्र, अग्निअस्त्र (**40 लीटर पानी में 1 लीटर मिलाते हुए**) 1 बीघा खेत या फसल में दोपहर बाद और खट्टी लस्सी (**40 ली. पानी में 1 ली. खट्टी लस्सी 8–10 दिन पुरानी**) का छिड़काव करें।
- मटर में चूर्णा सिता रोग (POWDERY-MILDEW), डाउनी मिल्डयू, बेकटिरियल विल्ट, एस्कोकाइटा ब्लाइट की रोकथाम के लिए खट्टी लस्सी (**40 ली. पानी में 1 ली. खट्टी लस्सी 8–10 दिन पुरानी**), जीवामृत जो की एक बहुत अच्छे फफून्दनाशक के तौर पर काम करता है, जंगल की कंडी व सोंठास्त्र (बिना पानी मिलाए) आदि का इस्तेमाल पिछले मास की भांति ही करें।
- मटर में लीफ माइनर (पर्णखनिक) थ्रिप्स और तेला की रोकथाम के लिए पौधअस्त्र/ दरेकास्त्र/ कडूअस्त्र (**बिना पानी मिलाए**), ब्रह्मास्त्र, अग्निअस्त्र (**40 लीटर पानी में 1 लीटर मिलाते हुए**) 1 बीघा खेत या फसल में दोपहर बाद) का इस्तेमाल लाभदायक होता है तथा फूल और फली लगने की अवस्था में सप्तधान्यांकूर अर्क का स्प्रे करें जिससे मटर की फली में पूरा दाना, और चमक आयेगी।
- गेहूं में सप्तधान्यांकुर अर्क (बिना पानी मिलाए), जीवामृत (**40 लीटर पानी में 2 लीटर कपड़े से छाना हुआ**) और खट्टी लस्सी (**40 लीटर पानी में 1 लीटर खट्टी लस्सी 8 –10 दिन पुरानी**) की स्प्रे करें।
- टमाटर और शिमला मिर्च की अगेती फसल की पौध के लिए बिजाई करें, अंकुरण के बाद आच्छादन को हटा दें, जीवामृत से सिंचाई करें और कमर तोड़ रोग की रोकथाम के लिए खट्टी लस्सी का छिडकाव करें।
- फ्रास्बीन की मध्य मौसमी और बूटा वर्गीय फसल का खेत तैयार करते समय अंतिम बुआई के दौरान **40 कि. ग्राम प्रति बीघा** के हिसाब से घनजीवामृत डालें। बीजों को बीजामृत से उपचार, बिजाई से 24 घंटे पूर्व करने के बाद ही लगायें। इससे अंकुरित होने तक बीज कीटों और बीज जनित बीमारियों से सुरक्षित रहेगा तथा अंकुरण भी जल्दी होगा। फ्रास्बीन की मुख्य फसल के साथ एक सह फसल के रूप में धनिया, मूली लगाई जा सकती है। फ्रास्बीन की अच्छी और अधिक पैदावार के लिए मिट्टी में सदैव सामान्य नमी का होना बहुत ही आवश्क है इसके लिए आच्छादन जरुर करें जिससे मिट्टी में आवश्यक नमी बनी रहेगी, खरपतवार नहीं उगेंगे, मिट्टी का तापमान फसल की पैदावार के लिए अनुकूल रहेगा और मिट्टी के सजीव जीवाणुओं के लिए उत्तम वातावरण बना रहेगा।
- फूल गोभी और बंदगोभी को कर्ड रोट से बचाव के लिए खट्टी लस्सी (**40 लीटर पानी में 1 लीटर खट्टी लस्सी 8–10 दिन पुरानी**), जीवामृत (जो की एक बहुत अच्छे फफूंदनाशक के तौर पर काम करता है), जंगल की कंडी और सोंठास्त्र (**बिना पानी मिलाए**) आदि का इस्तेमाल करें तथा कैबेज बटरफ्लाई, डायमंड बेक मोथ, और कैबेज हेड बोरर से बचाव के लिए उसके अण्डों को नष्ट करें, और समय समय पर पौधअस्त्र/ दरेकास्त्र/ कडूअस्त्र (**बिना पानी मिलाए**), ब्रह्मास्त्र, अग्निअस्त्र, दशपर्णी अर्क (**40 लीटर पानी में 1 लीटर मिलाते हुए**) 1 बीघा खेत या फसल में दोपहर बाद इस्तेमाल करें।
- सेब में सेनजोस स्केल, रेड माइट, वूली एफिड और थ्रिप्स की रोकथाम के लिए समय–समय पर पौधअस्त्र/ दरेकास्त्र/ कडूअस्त्र (**बिना पानी मिलाए**), ब्रह्मास्त्र, अग्निअस्त्र, दशपर्णी अर्क (**40 लीटर पानी में 1 लीटर मिलाते हुए**) इस्तेमाल करें।
- सेब के पौधों में जीवामृत का छिड़काव करें और तौलिये में घनजीवामृत डालने के साथ गुड़ाई करें और खाली जगह पर फ्रास्बीन लगाएं ताकि मिट्टी में नाईट्रोजन उर्वरक की आपूर्ति होती रहे, खरपतवार की संख्या को कम करता है और अतिरिक्त आय का भी स्त्रोत होता है।

❖ अगेती कद्दूवर्गीय फसलों की पौध उत्पादन के लिए बीजों को पॉलीथीन के लिफाफों में मिट्टी और घनजीवामृत डालें और बीजामृत से उपचार करके पॉलीथीन के लिफाफों में लगायें।

प्राकृतिक विधि द्वारा लगाये गये आलू की फसल

किसानो के हित में काम कीजिये, किसानो का जीवन बेहतर बनाये

किसानो के हित में काम कीजिये, किसानो का जीवन बेहतर बनाये

किसानो के हित में काम कीजिये, किसानो का जीवन बेहतर बनाये

किसान की आय-व्यय का लेखा जोखा

कुल क्षेत्र	फसलें	रासायनिक खेती		प्राकृतिक खेती	
		कुल व्यय	कुल आय	कुल व्यय	कुल आय

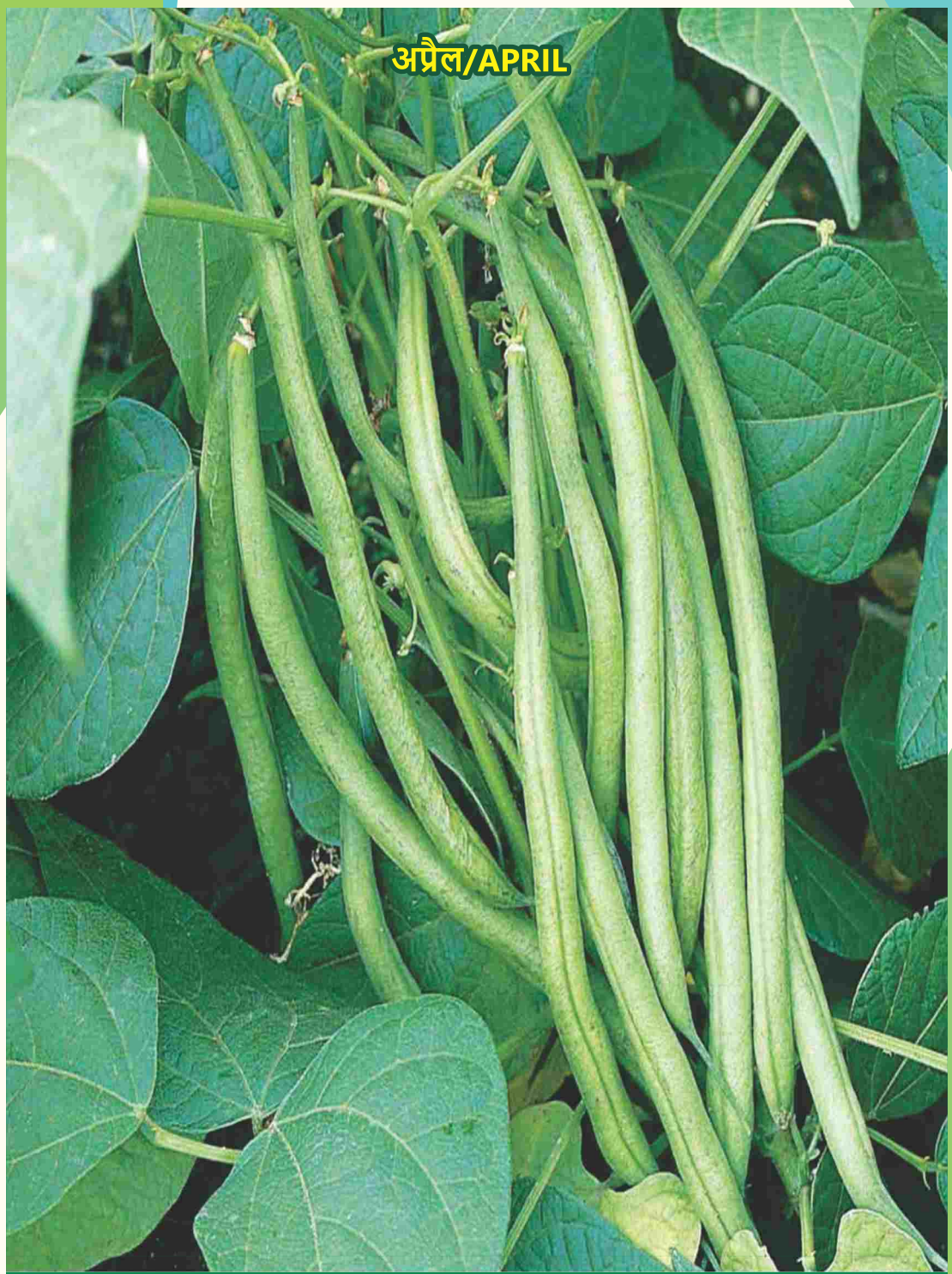

पर्यावरण को है बचाना, जरुरी है जहर मुक्त खेती को अपनाना

अप्रैल

- टमाटर, शिमला मिर्च की तैयार पनीरी को खेतों में लगाने के लिए खेत तैयार करने के लिए हल चला कर खोलें और 7 दिन धूप लगने दें इससे मिट्टी में सुप्त अवस्था में कीट, कीटों के अंडें और मिट्टी जनित बिमारियां खत्म हो जाती हैं। उसके पश्चात् मिट्टी में 3–4 बुआई करके खेत तैयार करें और अंतिम बुआई के समय पर घनजीवामृत (**40 कि. ग्रा. प्रति बीघा**) के हिसाब से डालें उसके बाद बेड/लाईन तैयार करें।
- टमाटर, शिमला मिर्च की तैयार पनीरी को उखाड़ने से 3–4 दिन पूर्व सिंचाई रोक दें परन्तु उखाड़ने से 1–2 घंटे पहले सिंचाई अवश्य करें तथा तैयार बीजामृत में डूबा कर फिर 60x40 सेंटीमीटर की दूरी पर रोपाई करें। टमाटर और शिमला मिर्च की फसल के साथ फ्रास्बीन के बूटा वर्गीय फसल को सह फसल के रूप में लगाया जा सकता है और गेंदे के फूलों को खेतों के किनारों पर लगाया जा सकता है जिससे फसल को नुकसान पहुँचाने वाले कीटों (तेला, सफेद मक्खी, लीफ माइनर, फल छेदक इत्यादि) के लिए जाल फसल के रूप में काम करता है।
- टमाटर, शिमला मिर्च की पौध की रोपाई के बाद खट्टी लस्सी (**40 लीटर पानी में 1 लीटर खट्टी लस्सी 8–10 दिन पुरानी**) का छिड़काव करते रहें इससे कमरतोड़ रोग से बचाव हो जायेगा।
- मटर की फसल का तुड़ान करने के बाद सप्तधान्यांकुर अर्क (**40 लीटर प्रति बीघा बिना पानी मिलाए**) का छिड़काव करें।
- गेहूँ में दानों की दुग्धावस्था आने पर सप्तधान्यांकुर अर्क (**40 लीटर प्रति बीघा बिना पानी मिलाए**) का छिड़काव करें और घनजीवामृत डालें। पीला रतुआ (पतों और उनके आवरणों पर छोटे– छोटे पीले फफोले कतारों में शिराओं के मध्य प्रकट होते हैं), भूरा रतुआ (गोल व भूरे रंग के बिखरे हुए कील पतों पर प्रकट होते हैं), काला रतुआ (गहरे भूरे रंग की कीलें, तनें, पतों और पतों के आवरणों पर दिखाई देती है जो बाद में फट जाती हैं), चूर्णलासिता रोग (रोग से प्रभावित पौधों पर फफूंद की सफेद से मटमैली रूई की हल्की तह नजर आती है)। इनके रोकथाम के लिए समय– समय पर खट्टी लस्सी (**40 ली. पानी में 1 ली. खट्टी लस्सी 8–10 दिन पुरानी**), जीवामृत (जो की एक बहुत अच्छे फफुन्द्नाशक के तौर पर काम करता है), जंगल की कंडी, सोंठास्त्र (बिना पानी मिलाए) आदि का छिड़काव करें।
- चनों में फल छेदक कीट (HELICOVERPA ARMIGERA) की रोकथाम के लिए ब्रह्मास्त्र, अग्निअस्त्र, दश्पर्णी अर्क (**40 लीटर पानी में 1 लीटर मिलाते हुए**) 1 बीघा खेत या फसल में दोपहर बाद छिड़काव करें ।
- कद्दूवर्गीय फसलों के तैयार पौधों की जड़ों को बीजामृत में डूबा कर लगाये और सुखी घास से अच्छादन करें। इन फसलों के साथ सह फसल के रूप में बेल वर्गीय फ्रास्बीन को लगाया जा सकता हैं जिससे की नाइट्रोजन उर्वरक की मात्र पूरी होगी, और अतिरिक्त आय का साधन भी होगा।
- टमाटर, शिमला मिर्च की पौध की रोपाई के लगभग 21 दिन बाद जीवामृत से सिंचाई करें और बेड चढाने का कार्य करें, जिससे की जड़ो में हवा–पानी का निकास अच्छा रहेगा तथा पौधों का वनस्पति विकास (VEGETATIVE GROWTH) अच्छे से होगा। बेड चढाने के बाद सिंचाई या जीवामृत को नालियों में डालें और टमाटर, शिमला मिर्च के पौधों के साथ बूटा वर्गीय फ्रास्बीन के बीज की बीजमृत से उपचार के बाद बिजाई करें। बैड चढाने के बाद अतिरिक्त खली जगह पर सुखी घास/ पतियों/ पुरानी फसल के अवशेष (जैसे की मटर) से आच्छादन किया जा सकता है, जिससे की कड़ी धूप में सिंचाई के पानी

की कम मात्रा होने पर आवश्यक नमी बनी रहेगी, जीवाणुओं के लिए आवश्यक सूक्ष्म पर्यावरण बना रहेगा और खरपतवार की संख्या को भी नियंत्रित करेगा। टमाटर, शिमला मिर्च की फसल के साथ सह फसल के रूप में बूटा वर्गीय फ्रास्बीन को लगाने से अतिरिक्त आय होने के साथ यह मिट्टी में नाइट्रोजन उर्वरक की मात्रा को बढाती है, तथा खली जगह पर खरपतवार को भी नहीं उगने देती ।

- टमाटर की फसल में पिन वर्म (*TUTA ABSOLUTA*) की रोकथाम के लिए फ्रूट फ्लाई ट्रैप्स/फीरोमोन ट्रैप्स (PHEROMONE TRAPS) लगायें (**3–4 ट्रैप्स एक बीघा खेत में**), जिससे फल छेदक मक्खी की जनसंख्या को नियंत्रित किया जा सकता है ।
- टमाटर, फ्रास्बीन, शिमला मिर्च की फसलों में लाल चिंटी, सफेद मक्खी की रोकथाम के लिए पीले स्टिकी ट्रैप्स (YELLOW STICKY TRAPS) स्थापित करें, खट्टी लस्सी (**40 लीटर पानी में 1 लीटर खट्टी लस्सी 8–10 दिन पुरानी**), पौधअस्त्र/ दरेकास्त्र/ कडूअस्त्र (**बिना पानी मिलाए**), ब्रह्मास्त्र, अग्निअस्त्र (**40 लीटर पानी में 1 लीटर मिलाते हुए**) 1 बीघा खेत या फसल में (दोपहर बाद) का स्प्रे करके इन कीटों को नियंत्रित किया जा सकता है। अप्रैल मास में हर 7 दिन बाद बदल– बदल कर इन कीट नाशी अस्त्रों का छिडकाव करें ।
- टमाटर, शिमला मिर्च, बूटा वर्गीय फ्रास्बीन में कटुवा कीड़े (CUT WORM-*AGROTIS IPSILON, SPODOPTERA LITUA*) की रोकथाम के लिए रोपाई से पूर्व खेत खोलने के बाद मिट्टी को 7 से 15 दिन धुप लगायें तत्पश्चात मिट्टी में घनजीवामृत डालें, जिससे इन कीटों के अंडें प्राकृतिक कीट दुश्मनों द्वरा नष्ट कर दिए जाते हैं और खड़ी फसल में ब्रह्मास्त्र, अग्निअस्त्र, दश्पर्णी अर्क (**40 लीटर पानी में 1 लीटर मिलाते हुए**) 1 बीघा खेत या फसल में (दोपहर बाद) पौधों के मिट्टी लगते तने के पास डालें।
- पेड़– पौधों (बागवानी) की फसलों पर हर 10 से 15 दिन के अन्तराल में जीवामृत (**40 लीटर पानी में 2 लीटर जीवामृत**), 8 दिन के अंतराल में रोग्नाशी दवाएं जैसे की खट्टी लस्सी (**40 लीटर पानी में 1 लीटर खट्टी लस्सी 8–10 दिन पुरानी**), जीवामृत (जो की एक बहुत अच्छे फफूंदनाशक के तौर पर काम करता है), जंगल की कंडी और सोंठास्त्र (**बिना पानी मिलाए**) रामबाण (**40 लीटर पानी में 2 लीटर जीवामृत और 1 लीटर खट्टी लस्सी 8–10 दिन पुरानी**) इत्यादि और हर 15 दिन के अंतराल में कीटनाशी दवायों जैसे की पौधअस्त्र/ दरेकास्त्र/ कडूअस्त्र (**बिना पानी मिलाए**), ब्रह्मास्त्र, अग्निअस्त्र, दश्पर्णी अर्क (**40 लीटर पानी में 1 लीटर मिलाते हुए**) 1 बीघा खेत या फसल में दोपहर बाद का स्प्रे बदल बदल कर करें।

टमाटर की फसल में फल छेदक मक्खी के लिए जाल/ट्रैप्स

टमाटर की फसल में पुरानी फसल के अवशेष से आच्छादन

फ्रास्बीन की प्राकृतिक फसल

शिमला मिर्च और बेल बर्गीय फ्रास्बीन की मिश्रित खेती

किसान की आय-व्यय का लेखा जोखा

कुल क्षेत्र	फसलें	रासायनिक खेती		प्राकृतिक खेती	
		कुल व्यय	कुल आय	कुल व्यय	कुल आय

मई /MAY

देश की उन्नति की तकदीर, किसानों की चमकदार तस्वीर

मई

- कद्दूवर्गीय फसलों में जीवामृत (**40 लीटर पानी में 2 लीटर जीवामृत कपड़े से छाना हुआ**) का छिड़काव करें और तोलिये बना कर आच्छादन करें और फूल मक्खी की रोकथाम के लिए PHEROMONE ट्रैप्स लगायें (**3 से 4 ट्रैप्स 1 बीघा भूमि के लिए**), जिससे इनकी जनसँख्या में कमी आयेगी।
- टमाटर, शिमला मिर्च की फसलों में जमीन से 30 सें.मी. की ऊँचाई तक के पत्तों को काट दें, पौधों को सहारा देने के लिए बांस के डंडों से सहयोग दें, जीवामृत को 2 पौधों के बीच की नालियों में डालें और अतिरिक्त खरपतवार को गुडाई करके निकाल दें और आच्छादन करें।
- टमाटर की फसल में जीवाणु मुरझान रोग, पछेता झुलसा रोग और बकाई रोट जैसी प्रमुख बीमारियों की रोकथाम के लिए खट्टी लस्सी (**40 लीटर पानी में 1 लीटर खट्टी लस्सी 8–10 दिन पुरानी**), जीवामृत (**40 लीटर पानी में 2 लीटर जीवामृत कपड़े से छाना हुआ**), जंगल की कंडी, सोंठास्त्र (**बिना पानी मिलाए**), रामबाण (**40 लीटर पानी में 2 लीटर जीवामृत व 1 लीटर खट्टी लस्सी 8–10 दिन पुरानी**) इत्यादि का हर 7 दिन के अंतराल में एक के बाद एक छिड़काव करें।
- टमाटर में प्रमुख कीट फल छेदक, फल मक्खी, पत्ता सुरंगी कीट (लीफ माईनर), की रोकथाम के लिए कीटनाशी दवायों जैसे की पौधास्त्र/ दरेकास्त्र/ कडूअस्त्र (**बिना पानी मिलाए**), ब्रह्मास्त्र, अग्निअस्त्र, दशपर्णी अर्क (**40 लीटर पानी में 1 लीटर मिलाते हुए**) 1 बीघा खेत या फसल में (दोपहर बाद) और जड़ गांठ सूत्रकृमि (Root knot nematode) की रोकथाम के लिए टमाटर के खेत में गेंदा लगायें।
- शिमला मिर्च की फसल में प्रमुख बीमारियों जैसे जीवाणु मुरझान रोग, फल सडन व पत्ता झुलसा रोग, डाईबैक और चूर्ण आसिता रोग (Powdery mildew)जैसी प्रमुख बिमारियों की रोकथाम के लिए खट्टी लस्सी (**40 लीटर पानी में 1 लीटर खट्टी लस्सी 8–10 दिन पुरानी**), जीवामृत (**40 लीटर पानी में 2 लीटर जीवामृत कपड़े से छाना हुआ**), जंगल की कंडी, सोंठास्त्र (**बिना पानी मिलाए**), रामबाण (**40 लीटर पानी में 2 लीटर जीवामृत व 1 लीटर खट्टी लस्सी 8–10 दिन पुरानी**) इत्यादि का हर 7 दिन के अंतराल में एक के बाद एक छिड़काव करें।
- गेहूं के फसल की कटाई शुरू करें।
- टमाटर और शिमला मिर्च के पौधों में फूल आने पर सप्तधानयांकुर अर्क का स्प्रे करें।
- पेड़– पौधों (बागवानी) की फसलों पर हर 10 से 15 दिन से अन्तराल में जीवामृत (**200 लीटर पानी में 20 लीटर जीवामृत**), 8 दिन के अंतराल में रोग्नाशी दवाएं जैसे की खट्टी लस्सी (**40 लीटर पानी में 1 लीटर खट्टी लस्सी 8–10 दिन पुरानी**), जीवामृत (**40 लीटर पानी में 2 लीटर जीवामृत कपड़े से छाना हुआ**), जंगल की कंडी, सोंठास्त्र (**बिना पानी मिलाए**), रामबाण (**40 लीटर पानी में 2 लीटर जीवामृत व 1 लीटर खट्टी लस्सी 8–10 दिन पुरानी**) इत्यादि और हर 15 दिन के अंतराल में कीटनाशी दवायों जैसे की पौधास्त्र/ दरेकास्त्र/ कडूअस्त्र (**बिना पानी मिलाए**), ब्रह्मास्त्र, अग्निअस्त्र, दशपर्णी अर्क (**40 लीटर पानी में 1 लीटर मिलाते हुए**) 1 बीघा खेत या फसल में (**दोपहर बाद**) का स्प्रे बदल–बदल कर करें।
- टमाटर और शिमला मिर्च की फसल की पौध के लिए बिजाई करें, बिजाई से पहले बीज को बीजामृत से 24 घंटे पूर्व उपचार करें और 3 मीटर लम्बी, 1 मीटर चौड़ी और 15 सें मी. ऊँची क्यारी में घनजीवामृत डालें और बिजाई के बाद बीजों को घनजीवामृत से ढक दें, जीवामृत से सिंचाई करें और तुरंत बाद आच्छादन करें।
- लहसून की फसल को निकालने का कार्य शुरू करें।
- मई महीने के दुसरे या तीसरे सप्ताह में गुठलीदार और सेब वर्गीय फसलों में पौध पेस्ट का प्रयोग करें।

टमाटर और फ्रास्बीन की मिश्रित प्राकृतिक खेती

शिमला मिर्च, फ्रास्बीन और धनियॉ की मिश्रित प्राकृतिक खेती

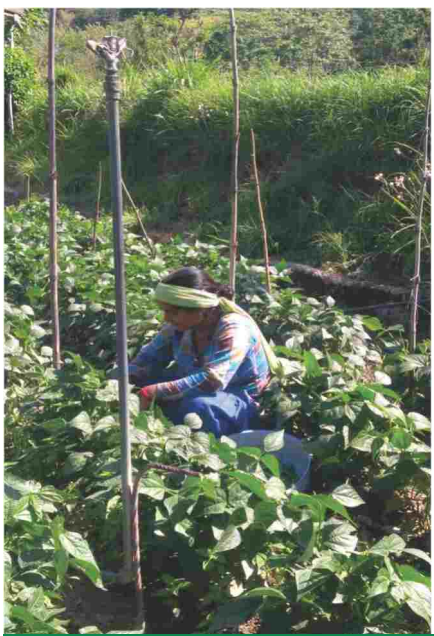

फ्रास्बीन और आलू की प्राकृतिक फसल का तुडान/कटाई

शिमला मिर्च की फसल में घनजीवामृत डालते हुए

शिमला मिर्च, प्राकृतिक फसल में आच्छादन

ईमानदारी मेहनत जिसकी शान है, वह मेरे देश का किसान है

ईमानदारी मेहनत जिसकी शान है, वह मेरे देश का किसान है

ईमानदारी मेहनत जिसकी शान है, वह मेरे देश का किसान है

किसान की आय-व्यय का लेखा जोखा

कुल क्षेत्र	फसलें	रासायनिक खेती		प्राकृतिक खेती	
		कुल व्यय	कुल आय	कुल व्यय	कुल आय

प्राकृतिक खेती को अपनाएं, अपने स्वस्थ्य और पर्यावरण को बचाएं

जून

- टमाटर, शिमला मिर्च की पछेती फसल की पौध को लगाने के लिए खेत तैयार करने के लिए खेत को हल चला कर खोलें और 7 दिन धूप लगने दें इससे मिट्टी में सुप्त अवस्था में कीट, कीटों के अंडें और मिट्टी जनित बिमारियां खत्म हो जाती हैं। उसके पश्चात् मिट्टी में 3–4 बुआई करके खेत तैयार करें और अंतिम बुआई के समय पर घनजीवामृत (**40 कि. ग्रा. प्रति बीघा**) के हिसाब से डालें उसके बाद बेड/लाईन तैयार करें।
- टमाटर की तैयार पनीरी को उखाड़ने के 3–4 दिन पूर्व सिंचाई रोक दें परन्तु उखाड़ने से 1–2 घंटे पहले सिंचाई अवश्य करें तथा तैयार बीजामृत में डूबा कर फिर 60x40 सेंटीमीटर की दूरी पर रोपाई करें। टमाटर की फसल के साथ माश की फसल को सह फसल के रूप में लगाया जा सकता है और गेंदे के फूलों को खेतों के किनारे पर लगाया जा सकता है जोकी फसल को नुकसान पहुँचाने वाले कीटों (तेला, सफेद मक्खी, लीफ माइनर, फल छेदक इत्यादि) के लिए जाल फसल (Trap Crop) के रूप में काम करता है।
- मक्की के लिए खेत तैयार करते समय घनजीवामृत **80 कि. ग्रा. प्रति बीघा** के हिसाब से अंतिम बुआई के समय डालें। मक्की की फसल के बीजों को बीजामृत से उपचारित करके ही लाईन में लगायें और सह फसल के रूप में दाल की फसल, बरसाती कद्दुवर्गीय फसल, हल्दी और अदरक को लगाया जा सकता है।
- टमाटर और शिमला मिर्च की अगेती फसल में समय–समय पर प्राकृतिक विधि से निर्मित कीटनाशी और रोगनाशी दवाओं का समय–समय पर छिड़काव करते रहें।
- शिमला मिर्च में तापमान के उत्तार चढ़ाव की वजह से फल बनने में मुश्किल होती है अत्यधिक तापमान में फल न बनना और कम आद्रता की वजह से फूल झड़ना। इससे बचाव के लिए फूलों की अवस्था में सप्तधान्यांकुर का छिड़काव व आच्छादन करें।
- टमाटर और शिमला मिर्च के पौधों में फूल आने पर सप्तधान्यांकुर अर्क का छिड़काव करें।
- टमाटर, शिमला मिर्च और बैंगन की खड़ी फसल में जीवामृत (**40 लीटर पानी में 2 लीटर जीवामृत**) का तीसरा छिड़काव करें।
- टमाटर, शिमला मिर्च और बैंगन की फसलों की प्रमुख बीमारियों और कीटों की रोकथाम के लिए समय समय पर रोगनाशी और कीटनाशी दवाओं का छिड़काव करते रहें।
- फ्रास्बीन की फसलों का तुडान करें और तुड़ान से बाद अगली फसल के लिए सप्तधान्यांकुर का छिड़काव करें
- पेड़– पौधों (बागवानी) की फसलों पर हर 10 से 15 दिन से अन्तराल में जीवामृत (**200 लीटर पानी में 20 लीटर जीवामृत**), 8 दिन के अंतराल में रोग्नाशी दवाएं जैसे की खट्टी लस्सी (**40 लीटर पानी में 1 लीटर खट्टी लस्सी 8–10 दिन पुरानी**), जीवामृत (**40 लीटर पानी में 2 लीटर जीवामृत कपड़े से छाना हुआ**), जंगल की कंडी, सोंठास्त्र (**बिना पानी मिलाए**), रामबाण (**40 लीटर पानी में 2 लीटर जीवामृत व 1 लीटर खट्टी लस्सी 8–10 दिन पुरानी**) इत्यादि और हर 15 दिन के अंतराल में कीटनाशी दवायों जैसे की पौधास्त्र/ दरेकास्त्र/ कडूअस्त्र (**बिना पानी मिलाए**), ब्रह्मास्त्र, अग्निअस्त्र, दशपर्णी अर्क (**40 लीटर पानी में 1 लीटर मिलाते हुए**) 1 बीघा खेत या फसल में (दोपहर बाद) का स्प्रे बदल–बदल कर करें।
- कद्दुवर्गीय फसल में जीवामृत की दूसरी स्प्रे (**40 लीटर पानी में 2 लीटर जीवामृत कपड़े से छाना हुआ**) डालें और फूल आने की अवस्था में सप्तधान्यांकुर (**20 लीटर प्रति बीघा बिना पानी मिलाए**) का छिड़काव करें ।
- अदरक के बीज को बीजामृत से उपचार के बाद 30 x 45 सें. मी. फासले पर बीजें।

टमाटर की बरसाती मुख्य फसल, उड़द सह फसल की मिश्रित खेती

अदरक की फसल में आच्छादन

फ्रास्बीन, अदरक , कद्दूवर्गीय फसलों की मिश्रित खेती

किसान की आय-व्यय का लेखा जोखा

कुल क्षेत्र	फसलें	रासायनिक खेती		प्राकृतिक खेती	
		कुल व्यय	कुल आय	कुल व्यय	कुल आय

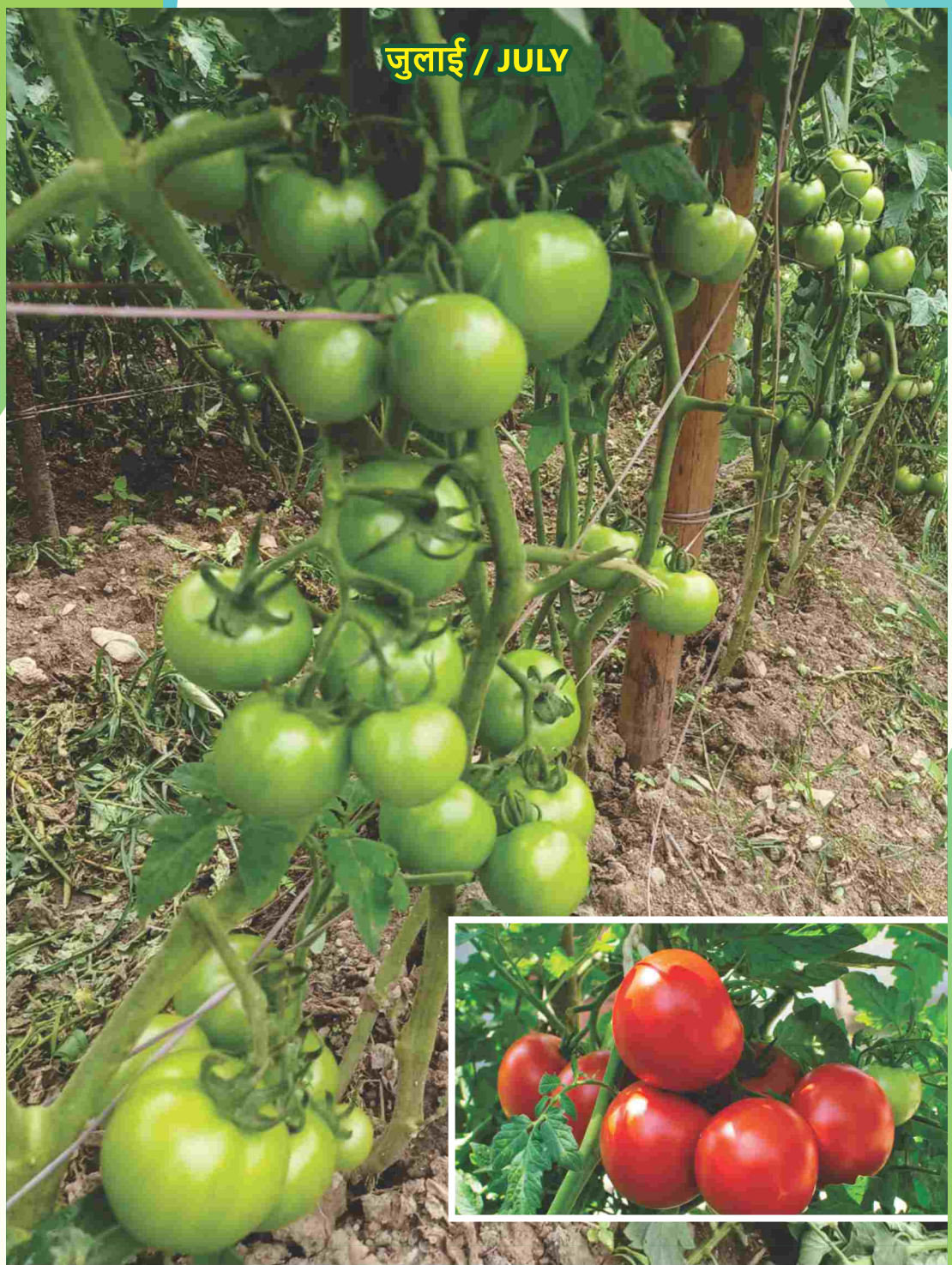

जुलाई / JULY

प्राकृतिक खेती देती जीवन दान,
हम सब करे इसका सम्मान

जुलाई

- टमाटर और शिमला मिर्च की फसल को कीटों के हमले से बचाने के लिये पौधास्त्र/ दरेकास्त्र/ कडूअस्त्र (बिना पानी मिलाए), ब्रह्मास्त्र, अग्निअस्त्र, दशपर्णी अर्क (**40 लीटर पानी में 1 लीटर मिलाते हुए**) 1 बीघा खेत या फसल में (दोपहर बाद) इत्यादि का हर 7 दिन के अंतराल में बदल–बदल कर स्प्रे करें और जूलसा रोग आने पर खट्टी लस्सी (**40 लीटर पानी में 1 लीटर खट्टी लस्सी 8–10 दिन पुरानी**), जीवामृत (**40 लीटर पानी में 2 लीटर जीवामृत कपड़े से छाना हुआ**), जंगल की कंडी, सोंठास्त्र (**बिना पानी मिलाए**), रामबाण (**40 लीटर पानी में 2 लीटर जीवामृत व 1 लीटर खट्टी लस्सी 8–10 दिन पुरानी**) का स्प्रे करें।
- टमाटर और शिमला मिर्च के बीज वाली फसलों मे ब्काई फल सडन व बैक्टिरियल विल्ट आदि रोगों की रोकथाम के लिये खट्टी लस्सी (**40 लीटर पानी में 1 लीटर खट्टी लस्सी 8–10 दिन पुरानी**) ,और सौंठास्त्र (**40 लीटर प्रति बीघा बिना पानी मिलाए**) का छिड़काव बारी–बारी से उप्लब्धता के आधार पर करें।
- टमाटर, शिमला मिर्च में लाल फलों तथा बैंगन के पीले फलों को बीज के लिये तोड़कर बीज निकालें।
- वर्षा के मौसम में जून के अंत से जुलाई तक कद्दुवर्गीय सब्जियों की बुआई के लिए सर्वोत्तम होता है बुआई से पहले नालियों में पानी लगा दें। जब नाली में नमी की मात्रा बीज बुआई के लिए उपयुक्त हो जाए तो बुआई के स्थान पर मिट्टी भुरभुरी कर के घनजीवामृत को मिट्टी में मिलाये और फिर बीज बोएं। बीज बुआई से पहले बीजामृत से उपचारित करें।
- बुआई के 21 दिन के बाद खेत में सूखी घास से आच्छादन करें। इससे खरपतवारों का नियंत्रण होगा और खेत में नमी बनी रहेगी।
- फलों की नर्सरी में सिंचाई के साथ जीवामृत का छिड़काव करें, नर्सरी क्यारियों में जीवामृत डालने का कार्य 21 दिन के अन्तराल पर दौहराते रहें।
- कद्दूवर्गीय सब्जियों में बुआई के बाद पौधों के बढ़वार के समय पर जीवामृत का उपयोग करें।
- जून में बोयी गयी कददूवर्गीय सब्जियों में मचान बनाकर सहारा दें तथा उचित जल निकास की व्यवस्था करें।
- खट्टी लस्सी (**40 लीटर पानी में 1 लीटर खट्टी लस्सी 8–10 दिन पुरानी**) का निरंतर छिड़काव करें, इससे चुर्णासिता रोग (पौधों के सभी भागों पर सफेद चुर्ण व बाद में हल्के काले धब्बे पड़ जाते हैं) और पीला रतुआ रोग से बचाव होगा।
- मक्की की फसल में सप्तधान्यांकुर अर्क का छिड़काव करें (**40 लीटर सप्तधान्यांकुर बिना पानी मिलाए**)।
- अदरक में बुआई के 21 दिन बाद जीवामृत का छिड़काव करें इससे उत्पादन में वृद्धि होगी।
- लाल चींटी– यह प्रजाति दीमक की तरह ही पौधों के जमीन के निचले भागों को नुकसान पहुँचाती है व प्रभावित पौधे सूख कर मर जाते हैं। ये रस चुसने वाले कीट हैं जोकि कलियों, फूलों की पंखुडियों, ऊत्तकों व पराग कणों को खाती हैं। इसके प्रकोप को ब्रह्मास्त्र, अग्निअस्त्र, दशपर्णी अर्क (**40 लीटर पानी में 1 लीटर मिलाते हुए**) और खट्टी लस्सी (**40 लीटर पानी में 1 लीटर खट्टी लस्सी 8–10 दिन पुरानी**) के उपयोग से कम किया जा सकता है।

कद्दूवर्गीय फसल में आच्छादन

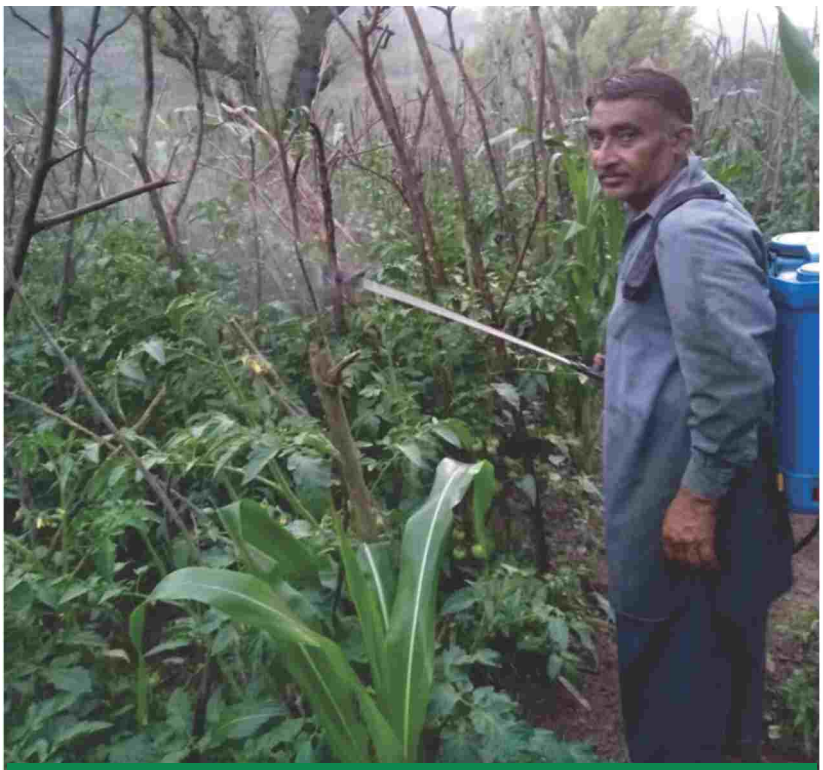

टमाटर की फसल में अग्निअस्त्र का छिड़काव

किसान की आय-व्यय का लेखा जोखा

कुल क्षेत्र	फसलें	रासायनिक खेती		प्राकृतिक खेती	
		कुल व्यय	कुल आय	कुल व्यय	कुल आय

प्राकृतिक खेती होगी जब जीवन का आधार
मानव में होगा आत्मियता का विकास

अगस्त

- अगस्त के पहले सप्ताह में गोभी की अगेती फसल की पौधशाला का कार्य शुरु करें, बुआई से पहले नर्सरी बेड में घनजीवामृत को मिलायें इससे भूमि की उर्वरकता में सुधार आता है और फसलों को तत्काल उर्जा मिलती है। बीज बुआई से पहले बीजामृत से उपचारित करें जिससे पौधे बिमारियों से बचे रहंगे और प्रारम्भिक अवस्था से ही मौसमी कीटों व रोगों से बचाव रहेगा।
- गोभी की नर्सरी बुआई के 2 सप्ताह बाद पौध रोपण के लिए तैयार हो जाती है। अगस्त के तीसरे सप्ताह में रोपाई का कार्य शुरु कर दें। गर्मी की फसल में पंक्ति से पंक्ति की दूरी 60 सें.मी. व पौधे से पौधे की दूरी 40 से 50 सें.मी. रखें। रोपाई शाम के समय करें और रोपाई के तुरंत बाद सिंचाई कर दें।
- पौधों की बुआई से पहले खेत में घनजीवामृत को मिलायें (**40 कि.ग्रा. प्रति बीघा**) इससे भूमि की उर्वरकता मे सुधार होगा और फसलों को तत्काल उर्जा मिलेगी।
- पौधों की जड़ों को बीजामृत में डुबोकर रोपाई करें ताकि पौधे बिमारियों से बचे रहें और प्रारम्भिक अवस्था से ही मौसमी कीटों और रोगों से बचाव हो सके।
- अदरक की फसल में खट्टी लस्सी का छिड़काव करे (**40 लीटर पानी में 1 लीटर खट्टी लस्सी 8–10 दिन पुरानी**)।
- कद्दूवर्गीय सब्जियों में दरेकास्त्र का छिड़काव करें (**20 लीटर प्रति बीघा बिना पानी मिलाए**)। सिंचाई के साथ जीवामृत का छिड़काव करें (**40 लीटर पानी में 2 लीटर जीवामृत कपड़े से छाना हुआ**)।
- जीवामृत (**40 लीटर पानी में 2 लीटर जीवामृत कपड़े से छाना हुआ**) डालने का कार्य 21 दिन के अन्तराल पर दौहराते रहें।
- बरसाती टमाटर की फसल में फूल आने पर सप्तधान्यांकुर अर्क का छिड़काव करे (**20 लीटर बिना पानी मिलाए**)।
- कद्दूवर्गीय सब्जियों में फल मक्खी को नियंत्रित करने के लिये पालम ट्रैप/pheromone ट्रैप्स खेतो में लगाये (**3–4 ट्रैप्स प्रति बीघा**)।
- गर्मी के मौसम में कद्दूवर्गीय सब्जी फसलों की अच्छी बढ़वार व अधिक उपज के लिए आरंभिक अवस्था में आच्छादन करें, जिससे खरपतवारों का नियंत्रण होगा।
- अदरक की खड़ी फसल में जीवामृत का छिड़काव करें (**40 लीटर पानी में 1 लीटर जीवामृत प्रति बीघा**)।

खीरे की फसल में पालम ट्रैप का उपयोग

मक्की और शिमला मिर्च कि मिश्रित प्राकृतिक फसल

इस माह में कृषि सम्बंधित मुख्य बातें

- ❖ कीट नियंत्रण (पूरी पैदावार का आधार) अगस्त माह में कीटों की संख्या में बहुत बढ़ोतरी हो जाती है तथा फसलों के पत्तों ,रस, फूल व फलों को अपना भोजन बनाते हैं । इससे पैदावार में काफी कमी हो जाती है। समय पर फसल लगाने तथा उपयुक्त प्राकृतिक विधि द्वारा निर्मित कीटनाशकों (नीमास्त्र, अग्निअस्त्र, ब्रह्मास्त्र व दशपर्णी अर्क) के प्रयोग से नुकसान को कम किया जा सकता है।
- ❖ रोग नियंत्रण (उपज गुणवत्ता का आधार) इसी माह में बहुत सी बीमारियां भी फैलती हैं, जिससे उपज में कमी के साथ–साथ गुणवत्ता भी गिर जाती है। बुआई के समय बीजामृत से बीज संस्कार तथा प्राकृतिक विधि द्वारा निर्मित रोगनाशकों (जीवामृत, खट्टी लस्सी, सौंठास्त्र व जंगल की कंडी) का समय–समय पर प्रयोग लाभदायक रहता है।

खरपतवार नियंत्रण (भरपूर फसल का आधार)

- ❖ खेतों के बीच तथा मेढ़ों पर घास–फूस बिल्कुल न उगने दें, इससे बीमारियों तथा कीटों को संरक्षण मिलता है। बीमार पौधों को भी खेत से निकालकर नष्ट कर दें ताकि बिमारियों को फैलने से रोका जा सके। आच्छादन से खरपतवार पर नियंत्रण किया जा सकता है।

जब जुताई शुरू होती है तब अन्य कलाएं प्रारंभ होती हैं अत: किसान मानव संस्कृति के प्रवर्तक हैं- डेनियल वेबस्टर

जब जुताई शुरू होती है तब अन्य कलाएं प्रारंभ होती हैं अत: किसान मानव संस्कृति के प्रवर्तक हैं- डेनियल वेबस्टर

देता रहा किसान उगा कर अनाज, चूका कर खून पसीने का ब्याज

देता रहा किसान उगा कर अनाज, चूका कर खून पसीने का ब्याज

देता रहा किसान उगा कर अनाज, चूका कर खून पसीने का ब्याज

किसान की आय-व्यय का लेखा जोखा

कुल क्षेत्र	फसलें	रासायनिक खेती		प्राकृतिक खेती	
		कुल व्यय	कुल आय	कुल व्यय	कुल आय

प्राकृतिक खेती करने वाले किसान का जीवन,
प्रकृति से स्थायी सहयोग है

सितम्बर

- सेब पूरी तरह से पकने पर फलों को तोड़ने का कार्य शुरु करें तत्पश्चात् सफाई, छंटाई, ग्रेडिंग और पैकिंग इत्यादि कार्य करें।
- मटर की अगेती किस्मों (किस्म–अरकल) की बीजाई सितम्बर माह के पहले सप्ताह में करें ।
- बीज बुआई से पहले बीजामृत से उपचारित करें, इससे अच्छा अंकुरण आयेगा और फसल में अच्छा उत्पादन मिलेगा। बुआई से पहले खेत में घनजीवामृत (**40 कि.ग्रा. प्रति बीघा**) को मिलायें, जिससे भूमि की उर्वरकता में सुधार आता है और इसके उपयोग से फसलों को तत्काल उर्जा मिलती है।
- मटर की फसल में रोपाई के 21 दिन बाद खेत में सूखी घास/पुरानी फसल के अवशेष/पेड़ों के सूखे हुए पत्ते से आच्छादन करें। इससे खरपतवारों का नियत्रण होगा और खेत में नमी बनी रहेगी।
- गोभी की फसल में रोपाई के 1 माह बाद दरेकास्त्र का छिड़काव करें (**20 लीटर बिना पानी मिलाए**)।
- अदरक की फसल में जीवामृत (**40 लीटर पानी में 2 लीटर**) का छिड़काव करें।
- कद्दूवर्गीय फसल में खट्टी लस्सी का छिड़काव करें (**40 लीटर पानी में 1 लीटर खट्टी लस्सी 8–10 दिन पुरानी**)।
- गोभी की फसल में दरेकास्त्र के छिड़काव के 10 दिन बाद खट्टी लस्सी का छिड़काव करें (**40 लीटर पानी में 1 लीटर खट्टी लस्सी 8–10 दिन पुरानी**)।
- गोभी की फसल में 21 दिन के अंतराल में जीवामृत (**40 लीटर पानी में 2 लीटर**) के उपयोग को दौहराते रहें।
- अदरक में (**40 लीटर पानी में 1 लीटर खट्टी लस्सी 8–10 दिन पुरानी**) का छिड़काव करें। इससे फसल में रोगों से बचाव होगा।

फूलगोभी की प्राकृतिक विधि से तैयार पौध

आओ हम प्राकृतिक खेती की शुरुआत कर, अपने पर्यावरण का संरक्षण करें

आओ हम प्राकृतिक खेती की शुरुआत कर, अपने पर्यावरण का संरक्षण करें

आओ हम प्राकृतिक खेती की शुरुआत कर, अपने पर्यावरण का संरक्षण करें

किसान की आय-व्यय का लेखा जोखा

कुल क्षेत्र	फसलें	रासायनिक खेती		प्राकृतिक खेती	
		कुल व्यय	कुल आय	कुल व्यय	कुल आय

अक्टूबर / OCTOBER

प्राकृतिक खेती करती पर्यावरण की रक्षा,
तभी होगी दुनिया की सुरक्षा

अक्तूबर

- फूलगोभी की फसल में फूल आने की अवस्था में सप्तधान्यांकुर अर्क का छिड़काव करें।
- लहसुन की फांके 6"–7" दूरी पर अक्तूबर माह में लगायें। बीजों को बीजामृत से उपचारित करें, जिससे बीज जनित बीमारियों से बचाव हो जायेगा, अच्छा अंकुरण आयेगा और फसल में अच्छा उत्पादन मिलेगा ।
- खेत तैयार करते समय घनजीवामृत (**40 कि.ग्रा. प्रति बीघा**) के हिसाब से उपयोग करें इससे भूमि की उर्वरकता मे सुधार आता है और फसलों को तत्काल उर्जा मिलती है।
- लहसुन की बुआई के 21 दिन बाद प्रति बीघा **40 लीटर पानी में 2 लीटर कपड़े से छाना हुआ** जीवामृत मिलाकर छिड़काव करे ।जहाँ सिंचाई की सुविधा ना हो वहाँ आच्छादन करें।
- गोभी की फसल का तुड़ान शुरु करें ।
- अदरक की फसल में जीवामृत (**40 लीटर पानी में 2 लीटर कपड़े से छाना हुआ**) का छिड़काव करें, जिससे फसल के उत्पादन में वृद्धि होगी।
- अदरक की फसल में खट्टी लस्सी (**40 लीटर पानी में 1 लीटर 8–10 दिन पुरानी**) का छिड़काव करे, जिससे सड़न रोग से बचाव होगा।

गोभी की फसल का तुडान

लहसून के बीज का बीजमृत से उपचार

किसान की आय-व्यय का लेखा जोखा

कुल क्षेत्र	फसलें	रासायनिक खेती		प्राकृतिक खेती	
		कुल व्यय	कुल आय	कुल व्यय	कुल आय

नवम्बर /NOVEMBER

किसान की उन्नति, देश की प्रगति

नवम्बर

- मटर की फसल की बुआई से पहले **40 कि.ग्रा. प्रति बीघा** घनजीवामृत खेत में अंतिम जुताई के समय मिला लें। इससे भूमि कि उर्वरकता में सुधार होगा और फसलों को तत्काल ऊर्जा मिलेगी।
- बीजों को बीजामृत से उपचारित करें जिससे अंकुरण से पहले बीमारियों व कीटों से बचाव हो जायेगा।
- मटर की मुख्य फसल के साथ मूली, शलजम और धनिया सहफसल के रुप में लगायें। इससे लागत कीमत की प्रतिपूर्ति होगी।
- बुआई के 21 दिन के बाद खेत में सूखी घास/ पुरानी फसल के अवशेष/ पेड़ो के सुखे हुए पत्तों से आच्छादन करें। इससे खरपतवारों का नियंत्रण होगा और खेत में नमी बनी रहेगी।
- लहसुन की फसल में खट्टी लस्सी का छिड़काव करें (**40 लीटर पानी में 1 लीटर खट्टी लस्सी 8–10 दिन पुरानी**)।
- लहसुन की फसल में जीवामृत का दूसरा छिड़काव (**40 लीटर पानी में 2 लीटर कपड़े से छाना हुआ**) करें।
- नवम्बर माह में लहसून की लाईनों के बीच घनजीवामृत डालें। इससे भूमि कि उर्वरकता में सुधार आता है और फसलों को तत्काल ऊर्जा मिलती है।
- मटर की फसल में बुआई के 21 दिन बाद जीवामृत (**40 लीटर पानी में 2 लीटर कपड़े से छाना हुआ**) का पहला छिड़काव करें ।
- अदरक की फसल में खट्टी लस्सी (**40 लीटर पानी में 1 लीटर 8–10 दिन पुरानी**) का छिड़काव करे , इससे सड़न रोग से बचाव होगा।
- गेहूँ की बिजाई से पूर्व दलहनी फसल (फ्रासबीन, उड़द, राजमाश, मूंगी व लोबिया) अवश्य लें, बीजों को बीजामृत से उपचारित करें, जिससे अंकुरण जल्दी होगा और बीमारियों से बचाव होगा। बीजाई से पुर्व और अंतिम जुताई के समय **80 कि. ग्रा. प्रति बीघा** घनजीवामृत मिला लें, इससे भूमि कि उर्वरकता मे सुधार आता है और फसलों को तत्काल ऊर्जा मिलती है।
- गेहूँ की बुआई के 1 मास के बाद जीवामृत का पहला छिड़काव (**40 लीटर पानी में 2 लीटर कपड़े से छाना हुआ**) करें।
- गेहूँ की मुख्य फसल के साथ सह फसल के रूप में चना और मटर को मिश्रित करके लाईनों में लगायें, जिससे गेहूँ को नत्रजन प्राप्त हो सके और खेत के चारों तरफ सरसों की बुआई करें। गेहूँ पर आने वाले रस चुसक कीटों को सरसों अपनी तरफ आकर्षित करेगी और गेहूँ बची रहेगी।

मटर की फसल के साथ मूली पालक और गेहूं की मिश्रित खेती में आच्छादन

मटर की फसल में जीवामृत का छिडकाव

किसान की आय-व्यय का लेखा जोखा

कुल क्षेत्र	फसलें	रासायनिक खेती		प्राकृतिक खेती	
		कुल व्यय	कुल आय	कुल व्यय	कुल आय

दिसम्बर /DECEMBER

जहर मुक्त खाओ, स्वथ्य जीवन बनाओ

दिसम्बर

- लहसुन में सूखी घास/ पुरानी फसल के अवशेष/ पेड़ के सूखे पत्तों से आच्छादन करें, इससे खेत में नमी बनी रहेगी और वापसा का निर्माण होगा जो फसल की अच्छी पैदावार के लिये अत्यावश्यक है।
- लहसुन में खट्टी लस्सी का छिड़काव करे (**40 लीटर पानी में 1 लीटर खट्टी लस्सी**)।
- मटर में पहले छिड़काव के 10 दिन बाद दूसरा छिड़काव करें (**20 लीटर दरेकास्त्र प्रति बीघा बिना पानी मिलाए**)।
- फलदार पौधों के तौलिये बनाते समय घनजीवामृत डालें और सूखी घास के साथ आच्छादन करें इससे भूमी में नमी बनी रहेगी और घनजीवामृत पौधों को पोषक तत्व प्रदान करता है।
- फलदार पौधों की टहनियों की शीतकालीन काँट–छाँट करके पूरे तने पर नीम मलहम / पौध पेस्ट की लिपाई करें।
- मटर की फसल में जीवामृत का दूसरा छिड़काव करें (**40 लीटर पानी में 2 लीटर जीवामृत कपड़े से छाना हुआ**)।
- मटर में दरेकास्त्र का छिड़काव करें (**20 लीटर प्रति बिघा बिना पानी मिलाये**)।
- प्याज की नर्सरी का कार्य शुरु करें। बीज बुआई से पहले बीजामृत से उपचारित करें, इससे अच्छा अंकुरण आयेगा और फसल में अच्छा उत्पादन मिलेगा ।
- नर्सरी बैड बनाते समय घनजीवामृत मिला लें इससे भूमि कि उर्वरकता में सुधार आता है और फसलों को तत्काल ऊर्जा मिलती है।
- गेहूं की बिजाई पूर्व दलहनी फसल अवश्य लें ,बीजों को बीजामृत से उपचारित करें इसके बाद बीमारियों से बचाव हो जायेगा। बीजाई के समय **30–40 किलो ग्राम प्रति बीघा** घनजीवामृत खेत मे जुताई के समय मिला ले इससे भूमि कि उर्वरक्ता में सुधार आता है और इसके उपयोग से फसलों को तत्काल उर्जा मिलती है।
- गेहूँ की बुआई के 1 मास के बाद जीवामृत का पहला छिड्काव करे यह फसल को पोषक तत्व उपलब्ध करवाता है
- गेहूं के साथ सह फसल चना, और मटर को मिश्रित करके लाईनों में लगाये जिससे गेहूँ को नत्रजन प्राप्त हो सके ।और खेत के चारों तरफ सरसो की बुआई करे। गेहूँ पर आने वाले रस चुसक कीटों को सरसों अपनी तरफ आकर्षित करेगी और गेहूँ बची रहेगी ।

गेहूं, चना और सरसों की मिश्रित खेती

गेहूं के साथ मटर की सह फसल

फलदार पौधों की शीतकालीन कांट- छांट

फलदार पौधों में तौलिये बनाने के बाद घनजीवामृत का उपयोग

किसान की आय-व्यय का लेखा जोखा

कुल क्षेत्र	फसलें	रासायनिक खेती		प्राकृतिक खेती	
		कुल व्यय	कुल आय	कुल व्यय	कुल आय

प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना

- इस योजना के अंतर्गत खरीफ में मक्का और धान तथा रबी में गेहूँ की फसल में, ओलावृष्टि, बाढ़, कीटों / बीमारियाँ (बड़े पैमाने पर) आदि के कारण होने वाले उपज मे नुक्सान की भरपाई हेतु बीमा सुरक्षा प्रदान की जाती है।
- फसल ऋण लेने वाले किसानों के लिए यह योजना अनिवार्य है और गैर - कर्जदार किसानों के लिए वैकल्पिक है।

Pradhanmantri Fasal Bima Yojana

फसल	बीमित राशि (रू.)	प्रीमियम (रू.) प्रति बिघा	अंतिम तिथियाँ	जोखिम विवरण
मक्का	30000	48	31 जुलाई	• तहसील व उप - तहसील में पिछले 5 वर्षो की औसत उपज के कम उपजाने पर क्षेत्र के सभी बीमित किसानों को कमी के अनुपात में परिपूर्ण राशि मिलती है। • वर्षा न होने के कारण यदि बिजाई पूरे क्षेत्र में नहीं होती है तथा कटाई के बाद15 दिन तक फसल खेत में वर्षा आदि से खराब हो जाती है, इन परिस्थितियों से भी सुरक्षा मिलती है। • जल भराव, ओलावृष्टि, भूस्खलन, बादल फटना व आसमानी बिजली गिरने से प्राकृतिक आपदा के कारण खड़ी फसलों का नुक्सान होने पर (खेत स्तर पर) क्लेम। • कम वर्षाअथवा विपरित मौसम परिस्थितयों के कारण फसल न बोई जाने पर भी (अधिसूचित क्षेत्र के आधार पर) क्लेम। • नोट:- परन्तु इनकी सूचना कंपनी को तीन दिन के अंदर देनी जरूरी है ताकि खेत का सर्वेक्षण करके नुक्सान का जायजा लेकर राशि का आंकलन हो सके।
धान	30000	48	31 जुलाई	
गेहूँ	30000	36	15 दिसम्बर	
जौ	25000	30	15 दिसम्बर	

प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना

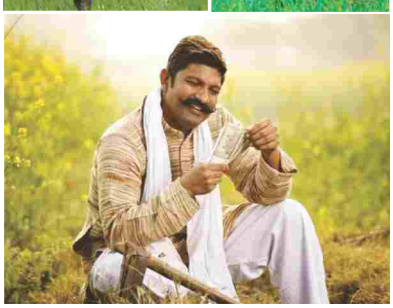

प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना के तहत देश के छोटे बड़े सभी किसानों को 6000 रूपये की सहायता राशि सरकार द्वारा दी जा रही है जो लाभार्थियों को मु. 2000/- रूपये की तीन किश्त निम्नलिखित श्रेणियां योजना के तहत लाभ के लिए पात्र नहीं होंगी:

- पूर्व और वर्तमान संवैधानिक पदाधिकारी।
- पूर्व और वर्तमान मंत्रियों और लोक सभा/राज्य सभा/राज्य विधानसभाओं/राज्य विधान परिषदों के पूर्व/वर्तमान सदस्य, नगर निगमों के पूर्व और वर्तमान महापौर, जिला पंचायतों के पूर्व वर्तमान अध्यक्ष।
- केन्द्र/राज्य सरकार के मंत्रालयों/विभागों और इसकी फील्ड इकाईयों के सभी सेवारत या सेवानिवृत अधिकारी और कर्मचारी केंद्रीय या राज्य सार्वजनिक उपक्रम ओर संलग्न कार्यालय/स्वायत्व संस्थान सरकार के साथ साथ स्थानीय निकायों के नियमित कर्मचारियों को छोड़कर।
- सभी सुपरनैचुरेटेड/रिटायर्ड पेंशनर्स जिनकी मासिक पेंशन रू 10,000/-से अधिक है (उपरोक्त श्रेणी के मल्टी टास्किंग स्टाफ/चतुर्थ श्रेणी/समूह कर्मचारियों को छोड़कर)।
- अंतिम मूल्यांकन वर्ष मे आयकर का भुगतान करने वाले सभी व्यक्ति।
- डॉक्टर इंजीनियर, वकील, चार्टर्ड अकाउटेंट और आर्कीटेक जो पेशेवर निकायों के साथ पंजीकृत हैं और अभ्यास करते हैं।

किसान क्रेडिट कार्ड

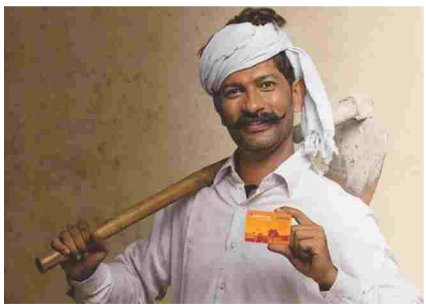

- ❖ इसका उद्देश्य किसानों को वित्तीय सहायता देकर कृषि क्षेत्र की व्यापक ऋण आवश्यकताओं को पूरा करना है।
- ❖ सभी वाणिज्यिक बैंक, क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक और राज्य सहकारी बैंक किसान क्रेडिट कार्ड की सुविधा प्रदान करने हेतु सरकार द्वारा अधिकृत है।
- ❖ किसान इस क्रेडिट कार्ड से खाद, बीज, कीटनाशक आदि कृषि आदानों को जरूरत के समय आसानी से खरीद सकते हैं और अपनी अन्य संबधित जरूरतों के लिए नकदी निकाल सकते हैं।
- ❖ किसान क्रेडिट कार्ड पर अनुदानित ब्याज की दर 4 प्रतिशत है तथा यह साधारण ब्याज है।
- ❖ ध्सान रहे उधार ली गई राशि का भुगतान 12 महीने की अवधि के अंदर किया जाना अनिवार्य है अन्यथा ब्याज की राशि बैंक की प्रचलित दरों के अनुसार देय होती है यानि ब्याज अधिक भरना पड़ता है।
- ❖ किसान क्रेडिट कार्ड धारक की दूर्घटना में मृत्यु होने की स्थिति में 50,000 रूपये तथा घायल होने की स्थिति में 25000 रूपये तक का बीमा सुरक्षा आवरण बीमा अतिरिक्त शुल्क अदा किए जाने देय हैं।

स्वस्थ धरा–खेत हरा मिट्टी की जाँच करवाएं–भरपूर फसल पाएं

- फसलों से भरपुर उत्पादन के लिए मिट्टी की जाँच करवाना अति आवश्यक है।
- मिट्टी की जाँच से हमें ज्ञात होता है कि कौन–कौन से पोषक तत्व अधिक, कम या पर्याप्त मात्रा में हैं तथा मिट्टी अम्लीय या क्षारीय तो नहीं है।
- मिट्टी की जाँच के आधार पर एकीकृत खाद प्रबंधन के अनुरूप देसी खाद, उर्वरक व मिट्टी सुधारकों का प्रयोग करना चाहिए।

- कृषि विभाग द्वारा सभी किसानों के लिए निःशुल्क मिट्टी परीक्षण सुविधा प्रदान की जाती है व मृदा स्वास्थ्य कार्ड का वितरण भी किया जाता है।
- जिला सोलन के किसानों के लिए मिट्टी परीक्षण प्रयोगशाला चम्बाघाट में स्थित है तथा किसानों को घर द्वार पर मिट्टी परीक्षण सुविधा हेतु एक मोबाईल मिट्टी परीक्षण वैन उपलब्ध है।
- इच्छुक किसान अपने नजदीकी कृषि कार्यालय के माध्यम से अपने खेत की मिट्टी के नमूने परीक्षण हेतु भेज सकते हैं।

राष्ट्रीय कृषि विकास योजना

- ❖ सब्जी उत्पादन के माध्यम से फसल विविधिकरण हेतु सहायता।
- ❖ खुली परागित किस्मों पर 50 प्रतिशत, अधिकतम 15000 रूपये प्रति हैक्टेयर तक की सहायता एवं
- ❖ संकर किस्मों पर 50 प्रतिशत, अधिकतम 25000 रूपये प्रति हैकटेयर तक की सहायता।

किसान कॉल सेंटर

- प्रदेश का कोई भी किसान प्रदेश के किसी भी कोने से कृषि संबधी जानकारी प्राप्त करने के लिए किसान कॉल सेंटर में 1800-180-1551 पर फोन के माध्यम से घर में बैठे मुफ्त में प्राप्त कर सकता है।

- किसान द्वारा 1800-180-1551 नंबर डायल करने पर किसान कॉल सेंटर पर एक कृषि विशेषज्ञ से बात होती है। वह विशेषज्ञ को अपनी कृषि से जुड़ी समस्या बताता है तथा विशेषज्ञ उसे सलाह मशवरा देता है।
- यह सेवा सुबह 6 बजे से रात 10 बजे तक सप्ताह के सातों दिन उपलब्ध रहती है।

जिला स्तर पर तैनात आतमा परियोजना के कृषि अधिकारी

क्रम संख्या	अधिकारी का नाम	पदभार	मोबाइल नं.	पंचायतों का दायित्व	कुल पंचायतें
1.	डॉ. रविन्द्र सिंह जसरोटिया	परियोजना निदेशक	94187–85407	24	240
2.	डॉ. अजब कुमार नेगी	परियोजना उप –निदेशक	94183–33549	96	
3.	डॉ. धर्मपाल गौतम	परियोजना उप –निदेशक	94184–99935	120	

खण्ड स्तर पर तैनात आतमा परियोजना के तकनीकी एवं सहायक तकनीकी प्रबंधक

विकास खण्ड	अधिकारी का नाम	पदभार	मोबाइल नं.	पंचायतों का दायित्व	कुल पंचायतें
सोलन	संजय कुमार	बीटीएम	98824–35775	13	37
	शिवानी ठाकुर	एटीएम	86280–89359	12	
	प्रिया सोनी	एटीएम	98821–94135	12	
कंडाघाट	मोनिका चौहान	बीटीएम	70182–89330	9	26
	अनिल भरद्वाज	एटीएम	94182–07366	8	
	शैलजा चंदेल	एटीएम	98829–63991	9	
धर्मपुर	गौरव कुमार	बीटीएम	98170–13460	14	44
	रितिका शर्मा	एटीएम	82196–69877	15	
	सुशीला	एटीएम	70181–38959	15	
कुनिहार	निखिल कुमार	बीटीएम	94189–05234	18	56
	सविता नेगी	एटीएम	94186–83731	19	
	भावना ठाकुर	एटीएम	82195–50857	19	
नालागढ़	प्रियंका ठाकुर	बीटीएम	88945–04567	27	77
	टेक चंद	एटीएम	86508–83801	25	
	दीक्षा सैनी	एटीएम	70185–81893	25	

जिला सोलन में प्राकृतिक उत्पाद प्राप्त करने के लिये कुछ किसानों के सम्पर्क सूत्र एवम् उत्पाद विवरण

संख्या	किसान का नाम	पिता/पति का नाम	पता	विकास खण्ड	फोन न.	प्राकृतिक कृषि उत्पाद की उपलब्धता
1.	श्री अनुभव बंसल	श्री दिनेश बंसल	ग्राम चौहुवाल डाकघर और तहसील नालागढ़ जिला सोलन	नालागढ़	9418093007	हल्दी, भिन्डी, माश, खीरा, लौकी व करेला
2.	श्री लाभ सिंह	श्री दौलत राम	ग्राम धौनी, तहसील राम शहर, जिला सोलन	नालागढ़	8628873755	टमाटर, शिमला मिर्च , बैंगन, मक्का , बीन्स, अदरक व धनियॉ
3.	श्री अश्वनी कुमार	श्री रवि दत्त	ग्राम तलाओ, डाकघर नंड तहसील नालागढ, जिला सोलन	नालागढ़	9882977200	गन्ना, टमाटर , माश, बीन्स , हल्दी, अदरक, धनियॉ व खीरा।
4.	श्री मलकीत सिंह	श्री चेतराम	ग्राम बड्डल,डाकघर मितियाँ तहसील नालागढ़ जिला सोलन	नालागढ़	9817185009	मक्का, शिमला मिर्च, माश, लोबिया , बैंगन, खीरा , हल्दी व लौकी ।
5.	श्री राजेश कुमार	श्री अमर चंद	ग्राम रायपुर जखोली, डाकघर लोधि मजरा, तहसील बद्दी जिला सोलन	नालागढ़	9816876940	मक्का, खीरा शिमला मिर्च, माश,लोबिया , बैंगन, करेला व हल्दी,
6.	श्री सोहन लाल	श्री हीरा लाल	ग्राम अंजीघाटी, डाकघर मलेरा, तहसील कसौली जिला सोलन	धर्मपुर	9816470682	फूलगोभी, गेहूं, टमाटर, मक्का, गोभी, बीन्स, माश व खीरा।
7.	श्री दुरेश कुमार	श्री राम रतन	ग्राम चेंथो, डाकघर प्राथा, तहसील कसौली, जिला सोलन	धर्मपुर	9459425699	काली मिर्च , सरसों, मक्का, केला, खीरा, अदरक व हल्दी
8.	श्री संजीव कुमार	श्री चंदी लाल	ग्राम भागुड़ी, डाकघर भागुड़ी, तहसील कसौली, जिला सोलन	धर्मपुर	9418742752	अदरक, खीरा फूलगोभी, गेहूं , सरसों , मक्का, बीन्स व धान।
9.	श्री गिरधारी लाल	श्री तुला राम	ग्राम घड़सी कुकाना, डाकघर कोट, तहसील कसौली, जिला सोलन	धर्मपुर	9805638540	गेहूं, मटर, चना, सरसों, लहसुन, धनिया , अदरक, मक्का, लोबिया, बीन्स, खीरा व माश ।

10.	श्री भूपेंद्र सिंह	श्री रूप राम	ग्राम घड़सी कुकाना, डाकघर कोट, तहसील कसौली, जिला सोलन	धर्मपुर	8219203733	गेहूं, मटर, सरसों, टमाटर, मक्का, सोयाबीन, अदरक, हल्दी , धनियॉ, शिमला मिर्च व बीन्स।
11.	श्री सुरेंद्र ठाकुर	श्री हरि सिंह	ग्राम मझेढ़, डाकघर जाबली, तहसील कसौली, जिला सोलन	धर्मपुर	8894884567	गेहूं, मटर, चना, सरसों, लहसुन, धनियॉ , अदरक, मक्का, लोबिया, खीरा व माश
12.	श्री राजिंद्र प्रकाश	श्री मेघ राम	ग्राम ग्रेन, डाकघर झाझा, तहसील कंडाघाट, जिला सोलन	कंडाघाट	8894737184	शिमला मिर्च, अदरक, करेला, लौकी, बीन्स, मक्का व मटर
13.	श्री बाल कृष्ण	श्री केशवा राम	ग्राम कांगुटी,डाकघर देलगी, तहसील कंडाघाट, जिला सोलन	कंडाघाट	9817559886	टमाटर, शिमला मिर्च , करेला, मक्का, बीन्स व मटर।
14.	श्री बिजेन्द्र मोहन	श्री दौलत राम	ग्राम धरीयां, डाकघर साधूपुल, तहसील कंडाघाट, जिला सोलन	कंडाघाट	9816392340	टमाटर, शिमला मिर्च , बीन्स व मक्का।
15.	श्रीमती पुष्पा	श्री इंद्र सिंह ठाकुर	ग्राम छावशा, डाकघर छावशा, तहसील कंडाघाट, जिला सोलन	कंडाघाट	9805698706	खीरा, बीन्स, मक्का व शिमला मिर्च
16.	श्री हरिंद्र सिंह	श्री चेत राम	ग्राम धरीयां, डाकघर साधूपुल, तहसील कंडाघाट, जिला सोलन	कंडाघाट	9816614813	टमाटर, शिमला मिर्च , बीन्स व मक्का।
17.	श्रीमती सोमा ठाकुर	श्री सुभाष चंद	ग्राम जखडेउं, डाकघर ममलीग, तहसील कंडाघाट, जिला सोलन	कंडाघाट	8544702624	टमाटर, शिमला मिर्च , बीन्स व मक्का।
18.	श्री रोहित	श्री ओम प्रकाश	ग्राम धरीयां, डाकघर साधूपुल, तहसील कंडाघाट, जिला सोलन	कंडाघाट	8219530801	शिमला मिर्च, बीन्स व खीरा।
19.	श्रीमती हिम किरण	श्री पिताम्बर सिंह	ग्राम तुंदल, डाकघर तुंदल, तहसील कंडाघाट, जिला सोलन	कंडाघाट	8629074295	टमाटर, बीन्स व घीया ।
20.	श्री रोहित कौशिक	श्री जोगिन्दर दत्त	ग्राम और डाकघर क्यारटू, तहसील कंडाघाट, जिला सोलन	कंडाघाट	8219846050	लौकी, बीन्स, खीरा, शिमला मिर्च व गाजर।

21.	श्री रवि शर्मा	श्री वेद प्रकाश	ग्राम और डाकघर बांजनी, तहसील कंडाघाट, जिला सोलन	कंडाघाट	9882150662	टमाटर, शिमला मिर्च, माश, बीन्स व विभिन्न प्रकार के फूल
22.	श्री विजय सिंह	स्वर्गीय श्री पी.डी. बेदी	ग्राम सेर बनेरा, डाकघर कोटला, तहसील और जिला सोलन	सोलन	9816029420	शिमला मिर्च, बीन्स, किवी, राजमाश , टमाटर, अदरक, सेब व चना।
23.	श्री शेर सिंह	श्री दुर्गा राम	ग्राम गम्बरपुल, डाकघर हरिपुर, तहसील और जिला सोलन	सोलन	8219615620	शिमला मिर्च, बीन्स, चना, खीरा, मक्का, टमाटर , मटर व मेथी।
24.	श्री शैलेंद्र शर्मा	श्री कृष्ण दास शर्मा	ग्राम दयारग बुखार, डाकघर दामकरी, तहसील व जिला सोलन	सोलन	8418751709	लाल शिमला मिर्च, पीली शिमला मिर्च, खीरा, टमाटर, बीन्स, मक्का, धनियॉ, मेथी व फूलगोभी।
25.	श्री केशव राम	श्री जगत राम	ग्राम गौल, डाकघर कुमारहट्टी, तहसील और जिला सोलन	सोलन	9816177586	चना, मक्का, बीन्स, टमाटर, गेहूँ, मटर, फूलगोभी व मेथी।
26.	श्री बिशन सिंह	श्री पत राम	ग्राम मथान, डाकघर दियोठी, तहसील और जिला सोलन	सोलन	9459116861	बीन्स, मक्का, शिमला मिर्च, टमाटर , गेहूं, मटर, धनियॉ व मेथी
27.	श्री राकेश ठाकुर	श्री राम रतन ठाकुर	ग्राम नांदल, डाकघर ओच्छघाट, तहसील और जिला सोलन	सोलन	8580493009	टमाटर, बीन्स, शिमला मिर्च, मूली, मटर, धनियॉ, मेथी, सोयाबीन व लहसुन।
28.	श्री दलीप ठाकुर	श्री बिशन सिंह	ग्राम आंजी, डाकघर गलंग, तहसील और जिला सोलन	सोलन	9318507830	शिमला मिर्च, बीन्स, मक्का, चना, खीरा, मक्का, टमाटर , मटर, मेथी , लहसुन व धनियॉ।
29.	श्री नरेंद्र कुमार	श्री प्यारे लाल	ग्राम रंगाह, डाकघर ओच्छघाट, तहसील और जिला सोलन	सोलन	9816435446	टमाटर लहसुन, बीन्स व मेथी।
30.	श्री राज कुमार	श्री रुलिया राम	ग्राम कोरों, डाकघर कुमारहट्टी, तहसील और जिला सोलन	सोलन	9625464207	टमाटर, शिमला मिर्च, बीन्स, गेहूं, मटर व खीरा।
31.	रेशमा देवी	शीतल सहायता समूह	ग्राम जाबल जमरोट , डाकघर कोठी, तहसील और जिला सोलन	सोलन	9816433675	शिमला मिर्च, बीन्स, खीरा व टमाटर।

32.	श्री संजय कुमार	श्री जिया लाल	ग्राम बनिया देवी, डाकघर जुबला, तहसील और जिला सोलन	कुनिहार	9805611750	टमाटर, शिमला मिर्च, बैंगन, भिन्डी, मूली, बीन्स, मक्का माश, खीरा, काली मिर्च व लौकी।
33.	श्री मोहन लाल	श्री सुंदर सिंह	ग्राम मोहल, डाकघर बखालग, तहसील अर्की, जिला सोलन	कुनिहार	8219453766	टमाटर, बीन्स, मक्का , माश खीरा व मूली।
34.	श्री जगदीश चंद	श्री चेत राम	ग्राम कंसवल, डाकघर पारनु, तहसील अर्की, जिला सोलन	कुनिहार	9882935160	टमाटर, बीन्स, मक्का , माश व खीरा।
35.	श्री सुरेन्द्र	श्री मेहर चंद	ग्राम जाबल, डाकघर जाबलमान, तहसील अर्की, जिला सोलन	कुनिहार	9816106960	टमाटर, बीन्स, खीरा व लौकी।
36.	श्री नरेश	श्री सुंदर लाल	ग्राम डिड्डू , डाकघर बखालग, तहसील अर्की, जिला सोलन	कुनिहार	8580768306	टमाटर, मूली, बीन्स, मक्का, माश व खीरा।
37.	श्री प्रेम भगत	श्री शांता राम	ग्राम दसेरन, डाकघर बखालग, तहसील अर्की, जिला सोलन	कुनिहार	9418049027	फूलगोभी, मक्का, माश, धनियॉ, मेथी, पालक , प्याज व लहसुन।
38.	श्री हरिश	श्री गीता राम	ग्राम रौडी, डाकघर पलोग, तहसील अर्की, जिला सोलन	कुनिहार	9418438544	फूलगोभी,करेला व बीन्स।
39.	श्री राजेंद्र ठाकुर	श्री विनोद ठाकुर	गाँव ध्यानपुर, डाकघर घनागुघाट, तहसील अर्की, जिला सोलन	कुनिहार	8894369669	सेब, बीन्स, सोयाबीन, मटर व मक्का।

2022

JANUARY

Su	Mo	Tu	We	Th	Fr	Sa
						1
2	3	4	5	6	7	8
9	10	11	12	13	14	15
16	17	18	19	20	21	22
23	24	25	26	27	28	29
30	31					

FEBRUARY

Su	Mo	Tu	We	Th	Fr	Sa
		1	2	3	4	5
6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19
20	21	22	23	24	25	26
27	28					

MARCH

Su	Mo	Tu	We	Th	Fr	Sa
		1	2	3	4	5
6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19
20	21	22	23	24	25	26
27	28	29	30	31		

APRIL

Su	Mo	Tu	We	Th	Fr	Sa
					1	2
3	4	5	6	7	8	9
10	11	12	13	14	15	16
17	18	19	20	21	22	23
24	25	26	27	28	29	30

MAY

Su	Mo	Tu	We	Th	Fr	Sa
1	2	3	4	5	6	7
8	9	10	11	12	13	14
15	16	17	18	19	20	21
22	23	24	25	26	27	28
29	30	31				

JUNE

Su	Mo	Tu	We	Th	Fr	Sa
			1	2	3	4
5	6	7	8	9	10	11
12	13	14	15	16	17	18
19	20	21	22	23	24	25
26	27	28	29	30		

JULY

Su	Mo	Tu	We	Th	Fr	Sa
					1	2
3	4	5	6	7	8	9
10	11	12	13	14	15	16
17	18	19	20	21	22	23
24	25	26	27	28	29	30
31						

AUGUST

Su	Mo	Tu	We	Th	Fr	Sa
	1	2	3	4	5	6
7	8	9	10	11	12	13
14	15	16	17	18	19	20
21	22	23	24	25	26	27
28	29	30	31			

SEPTEMBER

Su	Mo	Tu	We	Th	Fr	Sa
				1	2	3
4	5	6	7	8	9	10
11	12	13	14	15	16	17
18	19	20	21	22	23	24
25	26	27	28	29	30	

OCTOBER

Su	Mo	Tu	We	Th	Fr	Sa
						1
2	3	4	5	6	7	8
9	10	11	12	13	14	15
16	17	18	19	20	21	22
23	24	25	26	27	28	29
30	31					

NOVEMBER

Su	Mo	Tu	We	Th	Fr	Sa
		1	2	3	4	5
6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19
20	21	22	23	24	25	26
27	28	29	30			

DECEMBER

Su	Mo	Tu	We	Th	Fr	Sa
				1	2	3
4	5	6	7	8	9	10
11	12	13	14	15	16	17
18	19	20	21	22	23	24
25	26	27	28	29	30	31

2023

JANUARY

Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat
1	2	3	4	5	6	7
8	9	10	11	12	13	14
15	16	17	18	19	20	21
22	23	24	25	26	27	28
29	30	31				

FEBRUARY

Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat
			1	2	3	4
5	6	7	8	9	10	11
12	13	14	15	16	17	18
19	20	21	22	23	24	25
26	27	28				

MARCH

Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat
			1	2	3	4
5	6	7	8	9	10	11
12	13	14	15	16	17	18
19	20	21	22	23	24	25
26	27	28	29	30	31	

APRIL

Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat
						1
2	3	4	5	6	7	8
9	10	11	12	13	14	15
16	17	18	19	20	21	22
23	24	25	26	27	28	29
30						

MAY

Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat
	1	2	3	4	5	6
7	8	9	10	11	12	13
14	15	16	17	18	19	20
21	22	23	24	25	26	27
28	29	30	31			

JUNE

Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat
				1	2	3
4	5	6	7	8	9	10
11	12	13	14	15	16	17
18	19	20	21	22	23	24
25	26	27	28	29	30	

JULY

Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat
						1
2	3	4	5	6	7	8
9	10	11	12	13	14	15
16	17	18	19	20	21	22
23	24	25	26	27	28	29
30	31					

AUGUST

Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat
		1	2	3	4	5
6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19
20	21	22	23	24	25	26
27	28	29	30	31		

SEPTEMBER

Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat
					1	2
3	4	5	6	7	8	9
10	11	12	13	14	15	16
17	18	19	20	21	22	23
24	25	26	27	28	29	30

OCTOBER

Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat
1	2	3	4	5	6	7
8	9	10	11	12	13	14
15	16	17	18	19	20	21
22	23	24	25	26	27	28
29	30	31				

NOVEMBER

Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat
			1	2	3	4
5	6	7	8	9	10	11
12	13	14	15	16	17	18
19	20	21	22	23	24	25
26	27	28	29	30		

DECEMBER

Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat
					1	2
3	4	5	6	7	8	9
10	11	12	13	14	15	16
17	18	19	20	21	22	23
24	25	26	27	28	29	30
31						

सौजन्य : कृषि प्रौद्योगिकी प्रबंधन अभिकरण (आतमा)
कृषि विभाग, जिला सोलन (हि०प्र०)